अक्टूबर - 2024
वर्ष - 9 अंक - 10

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

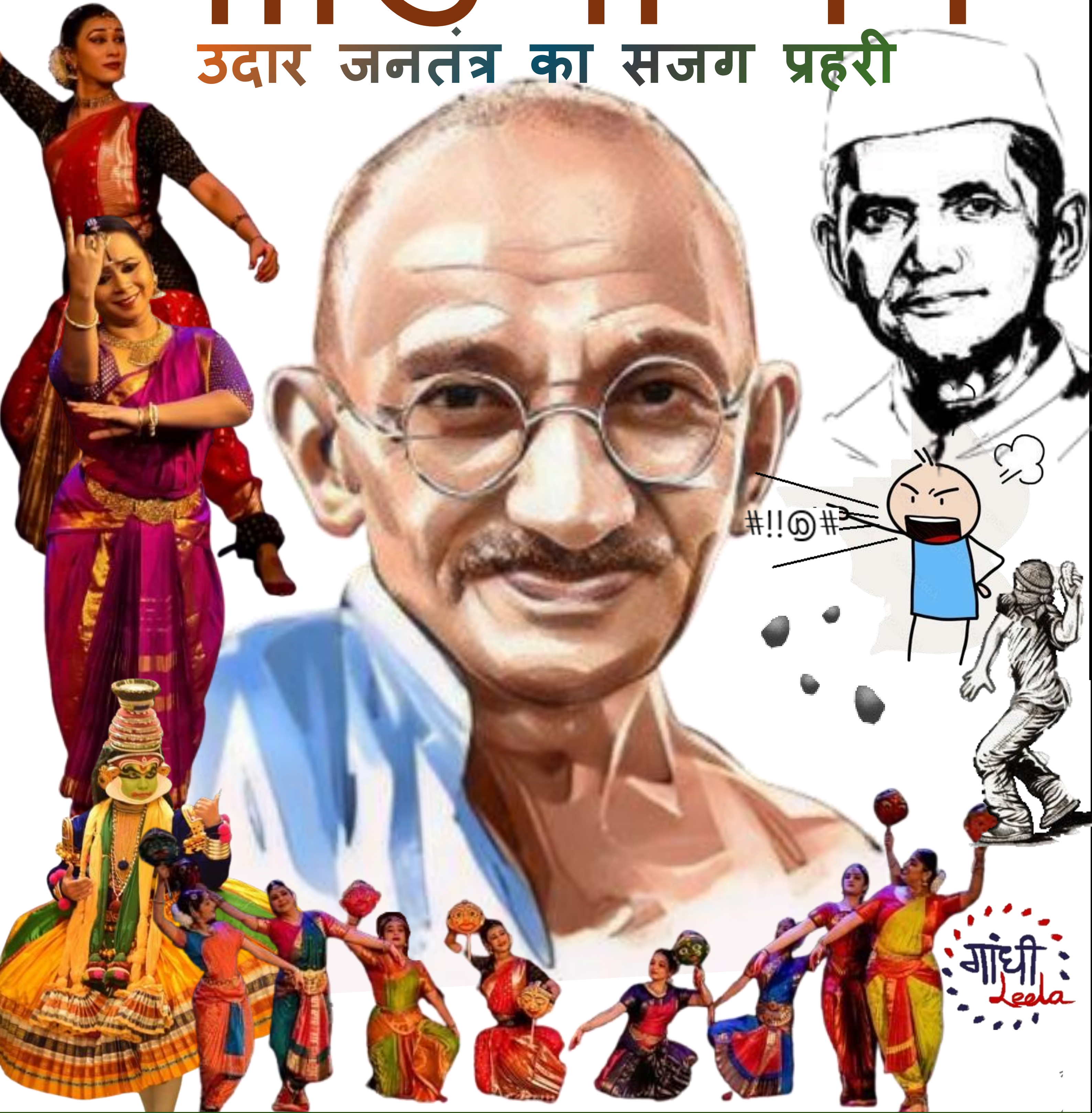

गांधीवाद की हत्या का प्रयास दंडनीय अपराध हो!

शुल्क - 50

हम क्यों...

मीडिया मैप एक वैचारिक पत्रिका है। मीडिया जगत के नीतिपरक और मूल्यनिष्ठ बिन्दु तथा इनसे जुड़ाव रखने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दे इसकी विषयवस्तु है। मीडिया मैप की संपादकीय नीति उदारवादी, आधुनिक, प्रगतिशील व सर्वधर्म समभाव की भावना पर आधारित है। मीडिया मैप हमारे बहुलतावादी समाज की विविधताओं से सृजित समस्त सोच, विचार, दृष्टिकोण, मूल्य और मान्यताओं को अपने में समाहित करने का एक प्रयास है । हमारा उद्देश्य वैज्ञानिक सोच द्वारा समाज से जुड़े मूल मुद्दों पर एक प्रबुद्ध जनमत विकसित करना है जिससे देश में संकुचित मानसिकता और आपसी टकराव से उपर उठकर एक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श का वातावरण तैयार हो सके।

मीडिया मैप

संपादकीय सलाहकार मंडल
डॉ. रामजीलाल जांगिड
डॉ बलदेवराज गुप्त
डॉ जॉन दयाल
डॉ गौहर रजा
मंगल सिंह आजाद

संपादक
प्रदीप माथुर

संयुक्त संपादक
सतीश मिश्रा

सहयोगी संपादक
अमिताभ श्रीवास्तव

ब्यूरो प्रमुख
राजीव माथुर

मुख्य सह-संपादक
प्रशांत गौतम

सह-संपादक
अंकुर कुमार

विशेष प्रतिनिधि
सुशील सोलंकी

मुख्य प्रबंधक
जगदीश गौतम

विधि परामर्शदाता
संजय माथुर

पंजीकृत कार्यलय
2325, सेक्टर - डी , पॉकेट - 2 ,
वसंतकुंज , नई दिल्ली

कार्यालय
69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम
गाजियाबाद-201014

दूरभाष - 9810385757 / 9910069262

एम बी के एम फाउंडेशन
प्रकाशन

ईमेल-
editor@mediamap.co.in

भारत की दो महान विभूतियाँ

संपादकीय		
पत्र पाठको के		
एक झलक पिछले अंक की		
विचार प्रवाह		
अक्टूबर 2 : गाँधी जयंती		
महात्मा गांधी विरोधी दुष्प्रचार की हक़ीक़त	डॉ सुरेश गर्ग	8
हमारे देश में गांधी की छवि पर होते छद्म हमले !	डॉ आर के पालीवाल	10
महात्मा गाँधी और भारतीय मुसलमान	डॉ मुज़फ़्फ़र हुसैन ग़ज़ाली	12
महात्मा गाँधी पर संगीतमय प्रस्तुति	सुरैना अय्यर	16
बापू - भक्त लखनऊ के यह राष्ट्रप्रेमी मुस्लिम	के विक्रम रॉव	18
जन्मदिवस : अक्टूबर 2		
शास्त्री जी मेरे पिता, मेरे गुरु और मेरे आदर्श	सुनील शास्त्री	20
राजनीतिक परिदृश्य		
जाति का प्रश्न: हिन्दू दक्षिणपंथियों का बदलता नैरेटिव	प्रो राम पुनियानी	22
बलिदान दिवस : अक्टूबर 31		
इंदिरा गांधी जैसा मैंने उन्हें जाना, समझा	प्रो प्रदीप माथुर	23
समसमयकी		
कैसे लगाम लगेगी बीजेपी नेताओ के इन बिगड़े बोल पर	डॉ॰ सलीम ख़ान	26
आर्थिक जगत		
फलते - फूलते पर्यटन व्यवसाय पर प्राकृतिक आपदा का ग्रहण	प्रो शिवजी सरकार	28
श्रद्धांजलि : जन्मतिथि अक्टूबर 18 - पुण्यतिथि अक्टूबर 18		
कृपया इस बुजुर्ग आदमी पर गया करे	गोपाल मिश्रा	30
मीडिया जगत		
यौन शोषण का खुलासा होने के बाद मलयालम सिनेमा उद्योग में उथल-पुथल	मीडिया मैप न्यूज़	32
टोरंटो गाथा 2024		
कनाडा में भारतीय भोजन की बहार	डॉ अशोक श्रीवास्तव	34
कथा साहित्य		
एक विकलांग का आत्मसम्मान	डी.एन. वर्मा	36
पुस्तक समीक्षा:		
नुक्कड़ की पाठशाला	अमिताभ श्रीवास्तव	38

पत्र पाठको के

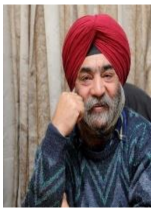

प्रभजोत सिंह - सितंबर अंक मिला. आपकी गुणवत्तापूर्ण प्रस्तुतियों के लिए मेरी हार्दिक बधाई। आपका काम आपके पेशेवर कौशल के बारे में बहुत कुछ बताता है। अगस्त और अब सितंबर संस्करण की सभी कहानियाँ अच्छी हैं। वे न केवल उच्चतम पेशेवर मानकों को पूरा करते हैं बल्कि पाठकों को इसमें शामिल मुद्दे की पूरी तस्वीर भी देते हैं। आपके जैसे अच्छे प्रकाशन प्रिंट पत्रकारिता के पुनरुद्धार की उम्मीदें जीवित रखते हैं। अपना अच्छा काम जारी रखें और शुभकामनाएं।

एक झलक पिछले अंक की

लोकतंत्र में जनता के अधिकारों का हनन चिंताजनक

ठंडा मतलब कोका कोला और टूथपेस्ट यानि कोलगेट की लोकतंत्र से भी ऐसी बहुत सारी आशाएँ जोड़ दी गयी है कि जिनका इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। मसलन जब न्याय और इंसाफ को खतरा होता है या अभिव्यक्ति की स्वतंत्र का गला होता जाता है –

डॉ सलीम खान

कमला हैरिस पर अपमानजनक टिपणी

अमेरिका में वरिष्ठ रानीतिक नेताओं द्वारा महिलाओ के बारे में ऐसे अपमानजनक टिप्पणियां सुन्ना दुखद है , क्योकि वे एक महिला को देश के राष्टपति के पद पर आसीन नहीं देख सकते।

इंदु रानी सिंह

मोदी के शासनकाल में उपेक्षित मीडिया

सोमवार २९ जुलाई २०२४ को भारतीय संसद में एक अभूतपूर्व तमाशा देखने को मिला , जब संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही को कवर करने वाले मेडियाकर्मियो को लोकसभा अध्यक्ष ॐ बिरला द्वारा नए नियमो के तहत परिसर में एक कांच के घेरे तक ही सीमित रहने के लिए कहा गया।

डॉ सतीश मिश्रा

हिंदी भाषा का कटोरा

भाषा के नाम पर कटोरा हाथ में लेने का समय फिर आ गया। जिसके पास जितना बड़ा कटोरा होता है वह उतना ही बड़ा आदमी माना जाता है। जिस हालात में आम आदमी उल्टा कटोरा लिए खड़ा है वहां सिर्फ सीधा कटोरा लेने वाले की ही पूजा होती है

अनूप श्रीवास्तव

संपादकीय

गांधीवाद की हत्या का प्रयास दंडनीय अपराध हो!

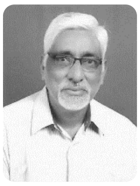

आज गांधी जयंती के अवसर पर प्रश्न यह नहीं है कि इस कालजयी महापुरुष के द्वारा स्थापित मानवतावादी मूल्यों का किस प्रकार से प्रसार-प्रचार किया जाय जिससे वह हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का आधार बन सकें। चुनौती इस बात की है कि कुछ निहित स्वार्थों और विवेकशून्य लोगों द्वारा गांधीवाद की हत्या के प्रयास को किस तरह विफल जाय।

वास्तव में यह प्रयत्न दुर्भाग्यपूर्ण है जिस महापुरुष के "सत्य और अहिंसा" पर चलने के मार्ग को तमाम विश्व में ख्याति मिली और तमाम बड़े लोगों ने जिसे अपना आदर्श माना उसी गांधी की आज कुछ लोगों द्वारा उनके अपने ही देश में छवि खराब करने की साजिश की जा रही है और उनके हत्यारे को भारतीय संस्कृति व मानवता का भी हत्यारा था, भिमामण्डित कीया जा रही है। इससे ज्यादा शर्मनाक बात हमारे लिए कुछ और नहीं हो सकती।

संकीर्ण और चरमपंथी हिंदुत्व का गांधीजी की वैचारिक हत्या का प्रयास वास्तव में आश्चर्यजनक है। नेहरू और उनके परिवार पर गलत ही सही प्रतिबद्ध हिन्दू न होने और मुसलमानों की ओर झुकाव का आरोप लगाया जाता रहा है। लेकिन महात्मा गांधी की छवि हमेशा एक हिंदूवादी व्यक्ति की थी। हां, यह सही है कि गांधी एक उदारवादी हिंदू थे लेकिन उन पर किसी भी तरह के हिंदू विरोधी होने का आक्षेप नहीं लगाया जा सकता। फिर एक हिंदू ने अपने सहयोगियों के साथ षड्यंत्र रच उनकी हत्या क्यों की और आज कौन लोग हैं जो इस हत्या को सही ठहरा रहे हैं और गांधी की हत्या के लगभग 76 वर्ष बाद स्वतंत्रता के इस वर्ष में गांधी के हत्यारे की स्तुति कर रहे हैं।

एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि गांधीवाद की हत्या का प्रयास करने वाले ये लोग कोई भी हो, ये न तो सच्चे हिंदू हैं और न ही हिंदू समुदाय के हितैषी। यदि इनको न रोका गया और इनके गतिविधियों को बंद नहीं गया तो आनेवाले दिनों में ये हिंदू समाज और देश का बहुत बड़ा अहित करेंगे । इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि कड़े कानून बना कर गांधी पर बेतुके और शर्मनाक लांछन लगाने तथा उनके हत्यारों को महिमामंडित करने के समस्त प्रयासों को अविलंब दंडनीय अपराध घोषित किया जाय।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उपनिवेशवादी मानसिकता के विरुद्ध महात्मा गांधी का योगदान अद्वितीय है। महात्मा गांधी का अपमान राष्ट्र का अपमान है। वह किसी दल या समुदाय के प्रतिनिधि न होकर समस्त भारतीयता के प्रतीक थे। यह बड़ी अजीब बात है कि महात्मा गांधी के ये विरोधी अपने को राष्ट्रवादी होने का दम भरते रहते हैं।

अब समय आ गया है कि अपने को राष्ट्रवादी कहने वाले इन छद्म शत्रुओं को तुरंत चिह्नित किया जाय और उन्हें कड़ा से कड़ा दंड दिया जाय जिससे हमारे स्वाधीनता संग्राम की गरिमा और हमारे देश का सम्मान अक्षुण्ण बना रहे।

~प्रदीप माथुर

आतंकवादी कौन ? राष्ट्रद्रोही कौन ?

लोकतांत्रिक व्यवस्था की सांस्कृति को सत्तापक्ष द्वारा विपक्ष और विपक्ष द्वारा सत्तापक्ष की आलोचना और एक दूसरे पर छींटाकशी या आरोप प्रत्यारोप कोई अनहोनी बात नहीं है। पर मोदी शासन के पिछले 10 वर्षों में इस पुरानी लोकतांत्रिक संस्कृति में बहुत बदलाव आया है। सामान्यता संख्या में कम होने के कारण अधिकतर प्रहार विपक्ष सत्तापक्ष पर करता था और सत्तापक्ष कभी हस कर और कभी अनदेखी कर इन प्रहारों को झेलता था। सर्वशक्तिमान होते हुए भी विपक्ष के प्रहारो को झेलना ही लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती थी।

पर मोदी शासन में सब उल्टा हो गया। कमजोर विपक्ष पर सब तरह के प्रहार होने लगे और सत्तापक्ष की आलोचना को अपराध माना जाने लगा। विपक्ष के नेताओं को झूठे अपराधों में फंसा कर उनका दमन किया गया तथा किसी भी दिशा से आते हुए विरोध के स्वरों को दबाया जाने लगा।

लेकिन इस बदले हुए परिदृष्य की सबसे हैरान करने वाली बात विपक्ष पर आतंकवाद और राष्ट्रद्रोही जैसे लांछन लगाना है। विपक्ष और आलोचना के सभी स्वरों को दबाने के लिए नये नये जुमले गढ़े गए और उनको बार बार दोहरा कर राजनीतिक विमर्श का अंग बनाया गया। आज से लगभग 90 वर्ष पूर्व। जर्मनी में हिटलर को नाजी पार्टी ने भी यही किया था। लोकतांत्रिक व्यवस्था की सीडी पर चढ़कर तानाशाह बने हिटलर के प्रचार मंत्री गोविल्स का कहना था कि यदी एक झूठ को ज़ोर देकर 100 बार बोला जाए। तो वह सच लगता है। शायद मोदी जी के प्रचारतंत्र को झूठे जुमले गढ़ने और उनको बार बार बोलने की प्रेरणा वहीं से मिली है।

लेकिन जो भी हो जनमत द्वारा चुने गए नेताओ की अपने मानगो के समर्थन में उतरे किसानों। बेरोजगार नौजवानो और कर्मचारियो को आतंकवादी कहने का क्या औचित्द है। आतंकवाद स्पष्टरूप से परिभाषित एक गंभीर अपराध है। भारत में मानहानि के कानून बहुत लचीले और कमजोर है। अमेरिका में किसी पर आतंकवादी होने का झूठा आरोप लगाने पर बहुत बड़ी सजा मिलने का प्रावधान है।

इस तरह राष्ट्रद्रोही होने का आरोप भी भाजपा के नेता बड़े आराम से अपने विरोधियो पर लगाते हैं। विपक्ष के छोटे बड़े नेताओं का तो छोड़िए। यहाँ तक की यह आरोप। विनोद दुआ और राज्यदीप सरदेसाई जैसे जाने माने पत्रकारों पर भी लगाया जाता है। राष्ट्रद्रोही की बात को बल देने के लिए टुकड़े टुकड़े गैंग और आंदोलन जीवी जैसे निहायत बत्तमीजी के जमले भी गढ़े गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी का भाजपा के नेता और उनका प्रचारतंत्र तथा भक्त समूह मानसिक रूप से इतना कुंठित है की वह स्वम से यह मामूली सा प्रश्न भी नहीं कर सकता कि उत्तर प्रदेश या बिहार में रहने वाला कोई व्यक्ति क्यों राष्ट्रद्रोही होगा और क्यों वह देश के टुकड़े करना चाहेगा। और फिर वही बात क्या इस तरह का आरोप लगाने वाले समूचे देश के मालिक हैं। सच तो यह है कि चाहे वर्ष 2014 का चुनाव है या फिर वर्ष 2019 और 2024 उन्हें कुलमतदाताओं के 37.5% से अधिक लोगो ने नहीं चुना है। सब चुनावी जोड़तोड़ और दुष्प्रचार करने के बाद भी 62% से अधिक मतदाताओं द्वारा नकारे गए भाजपा के नेता दूसरों को राष्ट्रीद्रोही कहे बड़ा हास्यपद लगता है।

असली आतंकवादी और राष्ट्रद्रोही कौन है इस कार्टून से पता लगता है जो हमे 1945 में नाथूराम गोडसे द्वारा प्रकाशित अग्रणी ने छापा था न सिर्फ गाँधी जी बल्कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम के सभी नेता इस हत्यारे के

निशाने पर थे। क्या बिना सोचे समझे पूरी गैरजिम्मेदारी से अपने विरोधियो पर आतंकवाद और राष्ट्रद्रोही जैसे गंभीर आरोप लगाने वाले भाजपा के नेताओ और समर्थकों में इतना नैतिक साहस है की महात्मा गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को खुलकर आतंकवादी और राष्ट्रद्रोही कह सके? **(प्रो प्रदीप माथुर)**

इंग्लैंड में मुस्लिम विरोधी दंगे हमारे लिए एक चेतावनी

जुलाई 2024 में इंग्लैंड के विभिन्न शहरों में दंगे और हिंसा की घटनाएं हुईं, जिनकी प्रमुख वजह झूठी खबरें और अप्रवासी विरोधी भावनाएं मानी गईं। मुस्लिम समुदाय विशेष रूप से इन हमलों का शिकार हुआ। इसके बाद यूके के 'सर्वदलीय संसदीय समूह' ने एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें भविष्य में इस्लामोफोबिया और सांप्रदायिक हिंसा रोकने के उपाय सुझाए गए। इस रिपोर्ट में "मुसलमान तलवार के दम पर इस्लाम फैलाते हैं" जैसे झूठे प्रचारों पर रोक लगाने की सिफारिश की गई।

यह घटना भारत के लिए भी एक सबक है, जहां इस्लाम के बारे में कई गलत धारणाएं प्रचलित हैं, जैसे कि इस्लाम तलवार की नोंक पर फैला। वास्तव में, भारत में इस्लाम का प्रसार व्यापारियों के संपर्क और न्याय-समता के संदेश से हुआ। स्वामी विवेकानंद ने भी माना कि मुसलमानों का आगमन गरीब और दबे-कुचले लोगों के लिए मुक्ति का संदेश था।

भारत में आज भी मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ गलत धारणाएं व्याप्त हैं। बाबरी मस्जिद का विध्वंस और काशी-मथुरा के धार्मिक स्थल विवाद इसी गलतफहमी के परिणाम हैं। इसके अलावा, मुसलमानों पर गौहत्या का आरोप और इसके चलते हिंसा भी बढ़ी है। 2010-2017 के बीच गौहत्या के शक में हुई हिंसा में 51% पीड़ित मुसलमान थे।

ऐसे माहौल में, सांप्रदायिक बयानबाजी और हिंसा आम हो गई है, और कई नेताओं के भड़काऊ बयानों से यह समस्या और गंभीर होती जा रही है। भारत में भी यूके की तरह ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि गलतफहमियों और नफरत के माहौल को समय रहते रोका जा सके और भविष्य में सांप्रदायिक हिंसा से बचा जा सके। **(प्रशांत गौतम)**

पाक अस्पताल महिला डॉक्टर और नर्स के लिए कितने सुरक्षित

भले ही भारत और पाकिस्तान राजनीतिक रूप से एक-दूसरे के दुश्मन हों, पर महिलाओं की सुरक्षा के मामले में दोनों देशों की स्थिति में कोई खास अंतर नहीं है। अस्पताल जैसे संवेदनशील स्थानों पर भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। हाल ही में कोलकाता के एक अस्पताल में एक महिला स्वास्थ्यकर्मी के साथ हुई दुष्कर्म की घटना ने यह साबित कर दिया कि सुरक्षा के नाम पर केवल दिखावे की व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

पाकिस्तान के अस्पतालों में महिला स्वास्थ्यकर्मियों को यौन उत्पीड़न और हिंसा का सामना करना पड़ता है। यह समस्या न केवल मरीजों और उनके रिश्तेदारों से है, बल्कि अपने साथी कर्मचारियों से भी होती है। महिलाएं अपनी सुरक्षा के लिए हर कदम पर संघर्ष करती हैं और अक्सर डर के साए में काम करती हैं।

अस्पतालों में सुरक्षा और सीसीटीवी कैमरों का होना जरूरी है, लेकिन सुरक्षा का इंतजाम पूरी तरह से नहीं होता। महिलाएं अपनी शिकायतें दर्ज करती हैं, लेकिन ज़्यादातर मामले रिपोर्ट नहीं होते।

इस समस्या को हल करने के लिए सरकारी कदमों के साथ-साथ अस्पताल प्रशासन को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। हर अस्पताल में सख्त सुरक्षा नियम और जीरो टॉलरेंस पॉलिसी होनी चाहिए। साथ ही, महिलाओं को भी अपने हक़ के लिए आवाज़ उठानी होगी।

महात्मा गांधी विरोधी दुष्प्रचार की हक़ीक़त

डॉ सुरेश गर्ग

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को लेकर कुछ तथाकथित विशिष्ठजन वैमनस्यपूर्ण मानसिकता से वशीभूत होकर सोशल मीडिया एवं घर- बाहर ना ना प्रकार से उनके चरित्र को लेकर दुष्प्रचार करने में लगे हैं; जो नितांत सत्यता से परे एवं दुर्भावनापूर्ण मनगढ़त प्रतीत होता है; जिसकी सत्यता सामने नहीं आने के दुष्परिणामस्वरूप आमजन एवं भावी पीढ़ी उसे ही सत्य मान कर भ्रमित एवं मलिन मानसिकता की शिकार हो रही है!

सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में गांधीजी को मुसलमान परस्त साबित करने के आशय से लिखा गया है कि उनकी माँ पुतलीवाई 'परणामी' संप्रदाय की थीं, जो हिंदू भेष में एक इस्लामिक संगठन है; इसलिए गांधी जन्म-जात मुसलमान हुए! गांधी के पिता मुसलमान के यहाँ नौकरी करते थे¡, गांधी का इकलौता दोस्त मुसलमान था,गांधी साउथ अफ्रीका मुसलमान की नौकरी में गये थे, इसीलिए गांधी ने पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये दिल वाये और वे देश के बंटबारे के लिए भी जिम्मेदार हैं!उन्होंने नेताजी सुभाषचंद्र बोस , शहीद भगतसिंह के साथ नाइंसाफी की और पं. नेहरू को प्रधानमंत्री बनवाया!

प्राणामी संप्रदाय 17वीं शताब्दी के भक्त संत देवचंद्र मेहता (जो राधावल्लभ संप्रदाय में दीक्षित हुए थे) एवं उनके शिष्य जामनगर के मेहराज ठाकुर उर्फ प्राणनाथजी की शिक्षाओं पर आधारित है। इनके मंदिरों में हिंदू एवं इस्लाम धर्मग्रंथ रखे होते हैं, जिन्हें आधार बनाकर सर्वधर्म समभाव एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति को समृद्ध करते हुए गीतासारतत्त्व पर स्वाध्याय किया जाता रहा है। इनका मूल धर्मग्रंथ 'तारतम सागर' है, जिसमें वैदिक शास्त्रों एवं कृष्ण के गोलोकधाम का रहस्योद्‌घाटन है। इसके अनुयायी सात्विक एवं निखालिस शाकाहार मानने वाले होते हैं।

हाँ, गांधीजी ने पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये दिलवाने के लिए दबाव बनाने की कोशिश की। वह इसलिए कि यह बंटवारे की शर्त में शामिल था और गांधीजी के लिए वहाँ के करोड़ो लोग भी भाई-बंधु की तरह ही थे, जो उस समय गहन संकट का सामना कर रहे थे। शायद, गांधीजी को यह उम्मीद रही होगी कि तात्कालीन मज़हबी उन्माद उतर जाने के बाद एक दिन फिर दोनों को एक किया जा सकता है! इसी उम्मीद से गांधीजी ने आज़ादी के बाद पाकिस्तान में जाकर रहने की घोषणा की थी। यदि उन्हें यह मौक़ा दिया जाता तो हो सकता है उनके सत्य, प्रेम और अहिंसा के बल पर आज भारत पहले की तरह एक होता।

> ***महात्मा गांधी के चरित्र पर दुष्प्रचार का असर***
> *वर्तमान समय में कुछ तत्व सोशल मीडिया और अन्य मंचों पर महात्मा गांधी के खिलाफ भ्रामक जानकारी फैला रहे हैं, जो सत्य से परे और समाज को विभाजित करने वाला है। यह दुर्भविना से प्रेरित प्रचार न केवल गांधी के योगदान को कमतर दिखा रहा है, बल्कि भावी पीढ़ियों के मन में भी गलत धारणाएं पैदा कर रहा है। समाज को इस प्रकार के विभाजनकारी प्रयासों से सावधान रहने की आवश्यकता है।*

गांधीजी को देश के बंटवारे के लिए दोषी ठहराना भी अल्पज्ञान एवं पूर्वाग्रह का नतीजा है। इसके लिए तात्कालीन स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का अध्ययन करना ज़रूरी है।

वर्ष 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के बाद जब ब्रिटेन में इसकी समीक्षा हुई तो इसके लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को दोषी ठहराया गया और यह निष्कर्ष निकला कि भारत में अपना राज कायम रखना है तो वहाँ की हिंदू-मुस्लिम एकता को तोड़ना ज़रूरी होगा। उनकी "डिवाइड एंड रूल" बांटों और राज करो नीति ही स्थाई कूटनीति बन गयी।

इसके बाद इसी रणनीति के आधार पर अंग्रेजी शासको ने भारत में सम्प्रदायक विभाजन और हिन्दू मुस्लिम टकराव की राजनीति का गन्दा खेल शुरू किया यही चाल सामाजिक एवं सांप्रदायिक स्तर पर चलना शुरू कर दिया। वर्ष 1905 में बंगभंग करके हिंदू-मुस्लिम के बीच जहर बोने का काम किया गया। अगले वर्ष में लॉर्ड मिंटों की परोक्षचाल के अंतर्गत कुछ प्रभावशाली मुस्लिम नेताओं द्वारा बंगाल की स्थानीय संस्थाओं के चुनावों में मुस्लिम समाज को विशेष आरक्षित क्षेत्र की मांग उठवाई गयी। नतीजतन मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसकी प्रतिक्रिया में हिंदुओं की तरफ़ से "भारत धर्म मण्डल" सामने आया। यह खाई गहरी होती चली गयी।

वर्ष 1915 में भारत भ्रमण के बाद गांधीजी को उनकी इस चाल का आभास हो जाने पर उन्होंने सर्वधर्म समभाव एवं सत्य अहिंसा पर आधारित असहयोग एवं सत्याग्रह का रास्ता अपनाने का निर्णय लिया। जब प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन के कमजोर होने एवं रूसी क्रान्ति सफल

होने के कारण भारत में भी स्वराज्य की महत्वाकांक्षा बलवती होने लगी, तब यहाँ भी महत्वाकांक्षी राजनीतिक नेतृत्व उभरने लगा। सांप्रदायिक रूप से मुस्लिम लीग आगे आयी तो हिंदू महासभा, आर्य समाज, आर एस एस , ब्रह्म समाज, अकाली दल आदि उसके सामने सामने खड़े हो गये। कांग्रेस के अंदर गरम-नरम दल, समाजवादी, वामपंथी ,स्वतंत्र समूह आदि बनने लगे। दलितों के नेता के रूप में बाबा साहब डॉ. अंबेडकर स्थापित हो चुके थे।

इन सबके उभरने में परोक्ष रूप से अंग्रेज हुकुमत का हाथ आग में घी डालने जैसा रहा। 'इंडियन समर' शीर्षक की ऐतिहासिक पुस्तक के अनुसार चर्चिल एवं मुस्लिम लीग के मुहम्मद अली जिन्ना के बीच गुप्त समझौता था। ये एक दूसरे से छद्म नाम से पत्राचार एवं छिपकर मुलाकात किया करते थे।

गांधीजी देश का विभाजन किसी भी कीमत पर नहीं चाहते थे। उन्होंने कहा भी था कि यह मेरी लाश पर ही संभव है। परन्तु चर्चिल किसी भी कीमत पर पूर्ण स्वराज देने को तैयार नहीं था, जबकि पं. नेहरू एवं नेताजी बोस किसी भी कीमत पर उससे कम पर तैयार नहीं थे। नेताजी ने अपना रास्ता अलग अख्तियार कर लिया था, । परन्तु अधिकांश अन्य संगठन एवं राजनीतिक पार्टियां अंग्रेजों के मोहजाल में फंसकर उनकी शर्तों पर डोमीनियन स्वराज पर संतुष्ट होकर उनके साथ थे। वे ही नही, देश के अधिकांश राजा, नवाब तो केवल ब्रिटिश राज में ही अपना भला देख रहे थे, अत: वे तो कुछ भी करने को तैयार थे।

अंग्रेजों ने समझा कि जब सब हमारे साथ हैं तो गांधी और मट्ठीभर कांग्रेसियों की क्या चिंता करनी! जब द्वितीय विश्व युद्ध के समय कांग्रेस ने बिना संपूर्ण स्वराज के मदद करने से इंकार कर दिया और 8 अगस्त 1942 को गांधीजी ने 'भारत छोडो' नारा देकर असहयोग आंदोलन की घोषणा कर दी तो अंग्रेज हुकुमत ने आंदोलनकारियों से जेले भर दीं। गांधी और कांग्रेस अकेले पड़ गये। परन्तु जब युद्ध के बाद सभी मजहबी एवं राजनीतिक संगठन अपनी अपनी तरह से आज़ादी मांगने लगे, अराजकता जैसी स्थिति होने लगी, और उधर चुनाव में चर्चिल के हार जाने एवं लेबर पार्टी के एटली के चुने जाने से बहुत कुछ बदल गया। अचानक गांधीजी को जेल से रिहा करके अन्य कांग्रेसियों की रिहाई शुरू की गयी। माउंटबेटन नया वाइसराय बन कर आया। ब्रिटिश सरकार ने आज़ादी की अंतिम तारीख 31मार्च 1948 तय कर दी। लेकिन गांधीजी और माउंटबेटन के हर प्रयास के बाद भी जिन्ना और मुस्लिम लीग अलग पाकिस्तान की मांग पर अड़े रहे...। गांधीजी बंटवारे के खिलाफ थे, अत: धीरे-धीरे वे वार्तालाप से बाहर होते चले गये...। अब मुख्यधारा में माउंटबेटन, उसकी पत्नी एडिना, जवाहरलाल नेहरु, वल्लभभाई पटेल, कृपलानी, जिन्ना, लियाकत खाँ, अब्दुरराब निश्तार और मास्टर बलदेवसिंह रह गये। जब सारे प्रयास करने के बाद नेहरू एवं पटेल को लगा कि वर्तमान परिस्थिति में बंटवारे की बात नहीं मानी तो देश के और अधिक टुकड़े हो सकते हैं, तब उन्होंने कांग्रेस के अंदर इस पर सहमति बनवा ली। जबकि गांधीजी जिन्ना को मनाने स्वयं एक बार नहीं कई बार उसके घर गये परन्तु वह नहीं माना। अंत में माउंटवेटन को लगा कि आज़ादी देने में देर की तो हालात बहुत ख़राब हो सकते हैं, उसने खतरा लेकर निश्चित तारीख के बहुत पहले 15 अगस्त को पूर्ण स्वराज्य देने की घोषणा कर दी। गांधीजी के पास चुप रहने और सक्रिय राजनीति से दूर चले जाने का रास्ता ही बचा और वे कलकत्ता में हिंदू-मुस्लिम दंगे में पीडितों के बीच गाँव -गाँव ,दर-दर मदद करने के लिए घूमते रहे। उन्होंने आज़ादी के किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। उन गांधी को विभाजन के लिए दोषी ठहराना कितना उचित है?

> प्राणामी संप्रदाय और गांधीजी का जुड़ाव
> प्राणामी संप्रदाय को लेकर फैलाए गए भ्रमों का खंडन करते हुए यह स्पष्ट किया जा सकता है कि यह संप्रदाय सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव की शिक्षा देता है।

इसी प्रकार नेताजी बोस को लेकर जो आरोप गांधीजी पर मढ़ा जाता है वह सत्यता से परे है। नेताजी गांधीजी के बहुत प्रिय थे ,लेकिन दोनों के रास्ते अलग थे। नेताजी ने ही गांधीजी को सबसे पहले राष्ट्रपिता कह कर संबोधित किया था। उन्होंने अपने साथियों से यह भी कहा था कि कहीं हम अपने अभियान में सफल न हो सकें और मैं न रहूँ तो आप गांधीजी के कहे अनुसार ही चलना।

पं. जवाहर लाल नेहरू भी केवल गांधीजी के कहने पर प्रधानमंत्री नहीं बने ,बल्कि अपनी काबिलियत से बने। इसमें अंतरराष्ट्रीय राजनीति एवं माउंटबेटन का बहुत बड़ा योगदान रहा। शहीद भगत सिंह के मामले में भी गांधीजी को बेवजह बदनाम किया जाता है।उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार एक बार नहीं कई बार वायसराय को लिखा और निवेदन भी किया, परन्तु उनकी बात नहीं मानी गयी।

क्या इस 'युग' में कोई ऐसी विभूति हुई है जो गांधीजी की तरह अपने अंतिम समय मुँह से 'हे राम' कहते हुए ईश्वरधाम गयी हो? क्या दुनिया के इतिहास में आज तक ऐसा कोई देवी-देवता या महापुरुष हुआ है जिसकी मूर्त्ति सौ से अधिक देशों में सम्मान के साथ स्थापित की गयी हों ?

डा सुरेश गर्ग रिटायर्ड सिविल सर्जन हैं। गांधी विचार के प्रचार प्रसार और ग्राम विकास के विविध रचनात्मक कार्यों में रुचि रखते हैं। बेतवा नदी उत्थान समिति विदिशा के संस्थापक सदस्य हैं।

हमारे देश में गांधी की छवि पर होते छद्म हमले !

डॉ आर के पालीवाल

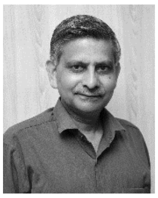

निहित स्वार्थी और कट्टरपंथी तत्व गांधी के समय भी उनके उदार और समावेशी विचारों और उनकी लोकप्रियता से परेशान होकर जब तब उन पर तरह तरह के आरोप लगाते रहते थे जिनमें कई संस्थाओं, यथा मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा एवं आर एस एस से जुडे कुछ लोग, वामपंथी और डॉ अम्बेडकर आदि प्रमुख थे। ऐसा करने वाले काफी लोग अंग्रेज सरकार से विविध लाभ के पद आदि भी लेते थे। उन दिनों भी गांधी के चरित्र और व्यक्तित्व पर फूहड़ता की हद छूते उस तरह के लांछन नहीं लगते थे जिस तरह की कीचड इधर पिछले कुछ सालों में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर एक नियोजित षडयंत्र की तरह फैलाई जा रही है। यह विडंबना देखिए कि जैसे जैसे गांधी की छवि वैश्विक पटल पर दिन ब दिन मजबूत होकर और ज्यादा निखरती जा रही है जिसकी एक झलक संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके जन्मदिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में मनाने की घोषणा कर और अपने परिसर में उनकी मूर्ति स्थापित कर विश्व को दिखाई है, ऐसे समय में हमारे अपने देश में उस महामानव को बौना साबित करने के कुत्सित प्रयास किए जा रहे हैं।

गांधी के ऊंचे कद से परेशान चंद लोगों के समूह तीन तरह से गांधी के व्यक्तित्व को कमतर करने की कोशिश करते हैं।1. कुछ उन्हें सीधे सीधे पाकिस्तान बनवाकर देश को खंडित कराने का मुख्य आरोपी बताकर उन्हें राष्ट्रदोही तक बताने की मूर्खता और धूर्तता करते हैं। 2. गांधी की छवि धूमिल करने वाले लोगों की दूसरी जमात गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को राष्ट्र भक्त बताकर गाँधी को अप्रत्यक्ष रूप से अपराधी साबित करने का दुष्प्रचार करती है। 3. तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो गांधी को एक तरफ कर उनकी जगह उनके किसी अनुयाई यथा सरदार वल्लभ भाई पटेल, नेताजी सुभाष चंद्र बोस या सरदार भगत सिंह और डॉ अम्बेडकर आदि को गांधी के स्थान पर प्रतिष्ठित करने की कोशिश करते हैं। दुर्भाग्य से ऐसे लोगों में कुछ सांसद/ पूर्व सांसद, मंत्री और पूर्व नौकरशाह एवम खुद को प्रबुद्ध कहने वाले लोग भी शामिल हैं। ऐसे तमाम लोगों में एक छोटा लेकिन बड़ा शातिर वर्ग उन लोगों का है जो गांधी के खिलाफ इधर उधर से छिटपुट कोई ऐसी अधकचरी जानकारी निकालकर उसका तिल का ताड़ बनाकर अतिशयोक्ति और आधा सच आधा झूठ मिश्रित कर विभिन्न संचार माध्यमों से प्रचारित प्रसारित करते हैं, जिन्हें आजकल व्हाट्स ऐप यूनिवर्सिटी के हास्यास्पद नाम से जाना जाता है।

> महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और उनके विचार सदियों से समाज के विभिन्न वर्गों को प्रेरित करते आए हैं। बावजूद इसके, कुछ स्वार्थी तत्व और संस्थाएँ उन्हें बदनाम करने का कुत्सित प्रयास कर रही हैं। सोशल मीडिया पर फैलाए जा रहे झूठे आरोप और अफवाहें गांधी की छवि को धूमिल करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में, यह आवश्यक है कि हम गांधी के विचारों को सरल भाषा में समाज तक पहुंचाएं और सरकार से सख्त कानून बनाने की मांग करें ताकि राष्ट्रपिता के खिलाफ झूठी अफवाहों पर रोक लगाई जा सके।

देश का एक अर्धशिक्षित वर्ग इधर उधर से उठाकर लगातार व्हाट्स ऐप, फेसबुक और ट्विटर आदि पर परोसी गई सूचनाओं को सही मानकर अज्ञानता के चलते इन पर विश्वास करने लगता है। अमेरिका और यूरोप के देश अपने देश की विभूतियों और लेखकों आदि का बेहद सम्मान करते हैं लेकिन हम गुलाम मानसिकता के एशियाई नागरिक अपनी विभूतियों को भी अपमानित करने की धृष्टता से बाज नहीं आते। अभी हाल ही में जिस तरह से बंगलादेश में अपने राष्ट्रपिता शेख मुजीबुर्रहमान की मूर्तियों को तोड़ा फोड़ा गया है वह भी ऐसा ही दुर्भाग्यजनक है जैसे हमारे यहां कुछ लोग अपने राष्ट्रपिता के खिलाफ ऊलजुलूल बयानबाजी से करते हैं। ज़्यादा दुख तो तब होता है जब कुछ डॉक्टर्स , इंजीनियर्सऔर अध्यापकों के व्हाट्स ऐप समूह में इस तरह की घटिया सामग्री फॉरवर्ड की जाती है। सबसे ज्यादा खतरनाक वे लोग हैं जो इस प्रकार की अफवाहें कच्चे घड़े जैसे कोमल मन के युवाओं के

समूह में प्रचारित प्रसारित करते हैं।आतंकवादी और संगठित अपराधी भी अपने नकारात्मक उद्देश्यों से घृणा और नफ़रत फैलाने के लिए इसी तरह के साधनों का दुरुपयोग करते हैं।

जब गांधी जीवित थे तब वे अपने ऊपर लगने वाले हर आरोप का तर्क सहित उत्तर देकर उसे अपनी प्रार्थना सभाओं और अखबारों में लिखे लेखों के माध्यम से जनता तक पहुंचाने का हर संभव प्रयास करते थे। अब जब गांधी हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं तब उनकी अनुपस्थिति में सरकार और गांधी को अपना आदर्श मानने वाले असंख्य नागरिकों का कर्तव्य बन जाता है कि ऐसे दुर्भावनाग्रस्त आरोप लगाने वाले नकारात्मक तत्वों पर लगाम लगाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाए। एक तरफ कानून बनाकर भी इस समस्या को काफी हद तक रोका जा सकता है, इसलिए हम सबको केंद्र सरकार से यह मांग करनी चाहिए कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बारे में गलत आरोप लगाने वाले तत्वों और ऐसी सूचनाओं को अन्य लोगों में किसी भी माध्यम से प्रचारित प्रसारित करने को अपराध की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। साथ ही गांधी वांग्मय का अध्ययन किए प्रबुद्ध जनों और गांधी विचार में आस्था रखने वाले नागरिकों को अपने अपने कार्य क्षेत्र के दायरे में गांधी के व्यक्तित्व और विचारों को सरल भाषा में ले जाना चाहिए ताकि लोग गलत आरोप लगाने वालों से गुमराह न हों।

दसेक साल पहले जब गांधी के व्यक्तित्व पर कीचड उछालने के अभियान ने जोर पकड़ा था तब मैं सोचता था कि किस तरह गांधी पर हो रहे निर्मम हमलों का जवाब दिया जाए। मेरे कुछ गांधीवादी अग्रज भी मुझसे कहते थे कि लेखक होने के नाते आपको इन हमलों के जवाब के लिए कुछ लिखना चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में मेरा नाटक "गांधी की चार्जशीट" लिखा गया था जिसमें गांधी पर लगाए जा रहे उन तमाम आरोपों का जवाब देश की सर्वोच्च अदालत में खुद गांधी द्वारा दिलवाया गया है। इस नाटक के माध्यम से जनता में गांधी के बारे मे फैलाई गई भ्रांतियों को दूर करने का साहित्यिक प्रयास किया गया है जिसमें गांधी बाइज्जत बरी होते हैं। गांधी को अपने जीवन में भी कई मुकदमों का सामना करना पड़ा था और हर मुकदमे के बाद गांधी और ज्यादा मज़बूत होकर बाहर आए थे। इस नाटक को कई संस्था जगह जगह मंचित कर रही हैं। उनका कहना है कि नाटक देखने के बाद दर्शक गांधी के व्यक्तित्व से और गहरे से जुड़ते हैं क्योंकि नाटक में उन्हें उन आरोपों के झूठ होने की तथ्यात्मक जानकारी मिलती है। गांधी के जीवन और विचारों को इसी तरह विभिन्न माध्यमों से जनता और उसमें भी विशेष रूप से स्कूल कॉलेज के विद्यार्थियों तक पहुंचाने के हर संभव प्रयास किए जाने चाहिएं।

महात्मा गाँधी के महान व्यक्तित्व को रेखांकित करनेवाली कवि सोहन लाल दुवेदी की कालजयी कविता के अंश पाठको के लिए प्रस्तुत करते हुए हमको हर्ष है ~ संपादक

युगावतार गाँधीजी

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर,
जिसके शिर पर निज धरा हाथ
उसके शिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गये उसी पर कोटि माथ;
हे कोटिचरण, हे कोटिबाहु!
हे कोटिरूप, हे कोटिनाम!
तुम एकमूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि
हे कोटिमूर्ति, तुमको प्रणाम!
युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख;
तुम बोल उठे, युग बोल उठा,
तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युगकर्म जगा, युगधर्म तना;
युग-परिवर्तक, युग-संस्थापक,
युग-संचालक, हे युगाधार!
युग-निर्माता, युग-मूर्ति! तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार!

गांधी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के ऐसे महानायक हैं जिनके व्यक्तित्व और रचनात्मक कार्यों पर हर भारतीय नागरिक को गौरव की अनुभूति होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब गांधी विचार स्कूली शिक्षा में शामिल कर बच्चों को रुचिकर तरीके से पढ़ाया जाए, मीडिया गांधी को उनकी जन्म तिथि और पुण्य तिथि तक सीमित न रखे और गांधी से जुडी देश विदेश की तमाम घटनाओं, यथा दांडी मार्च, गोलमेज सम्मेलन, पुणे समझौता, सत्याग्रह आंदोलन और अंग्रेजों भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों को समय समय पर प्रमुखता से याद करता रहे ताकि गांधी विचारों से आम अवाम का तारतम्य बना रहे। गांधी हमारी ऐसी विरासत हैं जिसे सहेजकर रखना हमारे लिए बेहद जरूरी है।

लेखक: पूर्व प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पद से सेवानिवृत हुए हैं और गांधी विचार पर आधारित समग्र ग्राम विकास के विविध रचनात्मक कार्यों से जुडे हैं। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में कुछ गांवों को आदर्श गांव बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

महात्मा गाँधी और भारतीय मुसलमान

डॉ मुज़फ़्फर हुसैन ग़ज़ाली

मोहन दास कर्मचंद गांधी इंग्लैंड से बैरिस्टर ऑफ ला करके भारत आए और बम्बई में वकालत शुरू की। उन्हें वकालत के पेशे में कामयाबी नहीं मिली। गांधी को परेशान देख कर उन के बडे भाई ने सेठ अब्दुल्ला से गांधी को काम देने की सिफारिश की, सेठ अब्दुल्ला का व्यवसाय भारत के अलावा दुनिया के कई देशों में फैला हुआ था। गांधी जी के भाई के अब्दुल्ला साहब से अच्छे संबंध थे। सेठ अब्दुल्ला ने कहा कि हमें दक्षिण अफ्रीका के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो वहां हमारे लीगल मामलों की अदालत में पैरवी कर सके। गांधी अगर वहां जाने को तैयार हों तो मालूम कर लें।

गांधी जी दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए राजी हो गए। गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए अब्दुल्ला साहब की कंपनी ने जहाज के पहले दर्जे में बुकिंग करा दी। उस वक़्त फर्स्ट क्लास में केवल गोरे यात्रा कर सकते थे। भारतीय होने के नाते गांधी जी को यात्रा के दौरान भेदभाव का सामना करना पड़ा। वह जहाज़ से डरबन पहुंचे, वहां से प्रीटोरिया जाने के लिए ट्रेन ली। उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकट था इस के बावजूद उन्हें अपमानित होना पड़ा।

अत्याचार और जुल्म का सिलसिला यहीं नहीं थमा। इस यात्रा के दौरान

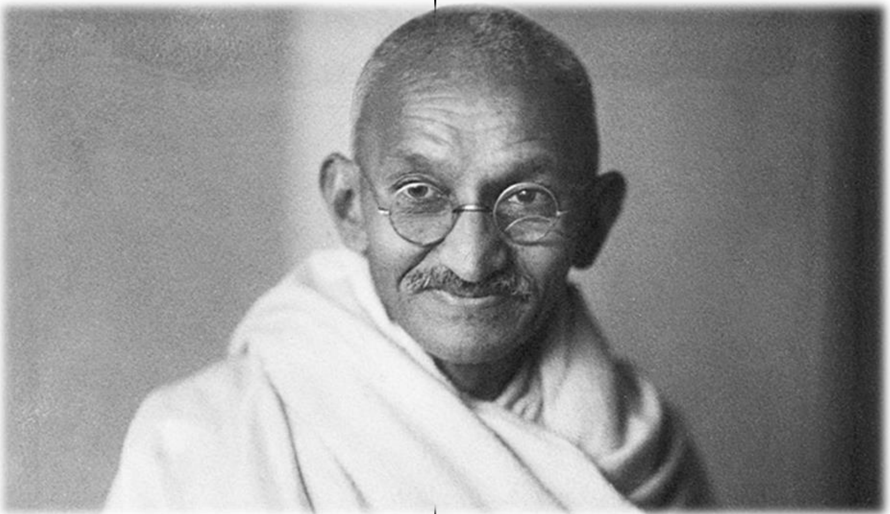

एक यूरोपियन यात्री द्वारा एक अन्य यात्री की पिटाई की गई। गाँधी को प्रीटोरिया के होटलों में प्रवेश नहीं करने दिया, उन्हें होटल में ठहरने नहीं दिया गया। इसके अलावा जब गाँधी जी अब्दुल्ला जी के केस में जज के समक्ष पेश हुए तो उनकी पगड़ी पर सवाल उठाया गया। बहस के दौरान जज ने गाँधी को पगड़ी उतारने का आदेश दिया। हालांकि, गांधी जी ने जज के आदेश को मानने से इंकार कर दिया था। वह इन घटनाओं से आहत और भारतीयों के खिलाफ हो रहे भेदभाव को देख कर वह बहुत विचलित हो गए थे। उन्होंने इस भेदभाव से लड़ने के लिए नेटाल इंडियन कांग्रेस की १८९४ में स्थापना की थी। इस संस्था ने बाद में रंगभेद का विरोध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह १८९३ से १९१४ तक दक्षिण अफ्रीका में नागरिक अधिकारों के लिए सत्याग्रह करते रहे। १९१५ में वह भारत लौटे, उस समय यहाँ खिलाफत आंदोलन चल रहा था। गोपाल कृष्णा गोखले ने गांधी जी से मुलाक़ात के समय कहा था कि आंदोलन के लिए देश का भ्रमण कर जनता को समझना ज़रूरी है। मौलाना मोहम्मद अली जौहर और शौकत अली के साथ वह खिलाफत आंदोलन के साथ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए।

इस के द्वारा उन्हें देश के लोगों को दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार के बारे में बताने का अवसर मिला। खिलाफत आंदोलन ने गाँधी को देश भर में परिचित कराया। इसके बाद जब उनहोंने १९१७ में बिहार के चम्पारण ज़िले में जबरन नील की खेती के

विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन किया तो वह देश भर में पहचाने जाने लगे।

उस वक़्त एक ओर हिन्दू मुसलमानों का अधिकांश उच्च वर्ग कांग्रेस के साथ था। दूसरी ओर द्विराष्ट्र के सिद्धांत में विश्वास रखने वाले हिन्दू महासभा के साथ थे। इन का विचार था कि स्वतंत्रता के बाद देश में हिंदुओं की सत्ता हो। बाद में यह विचार हिन्दूराष्ट्र के नारे में बदल गया। इस ख्वाब को पूरा करने के लिए हिन्दू वादियों ने अंग्रेज़ों का विरोध करने के बजाए उनका साथ देने का निर्णय लिया। उनहोंने खुद को स्वतंत्रता संग्राम से दूर रखा। प्रारम्भ में हिन्दूराष्ट्र के विचार को स्वीकार्यता नहीं मिली। बाद में हिन्दू महासभा की सोच को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने आगे बढ़ाया। मुस्लमानों में भी कुछ द्विराष्ट्र की परिकल्पना के समर्थक थे। इन्होंने हिन्दू महासभा की प्रतिक्रिया में मुस्लिम लीग का गठन संयुक्त प्रान्त और बंगाल के रूढ़िवादी प्रतिष्ठित लोगों और ज़मीदारों द्वारा किया गया था।

गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका का संघर्ष

मोहन दास गांधी, इंग्लैंड से बैरिस्टर बनकर लौटने के बाद, जब दक्षिण अफ्रीका पहुंचे, तो उन्हें वहां भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। यात्रा के दौरान भेदभाव, होटल में प्रवेश से मना किया जाना, और अदालत में अपमान की घटनाओं ने गांधी जी को भारतीयों के खिलाफ हो रहे अन्याय के प्रति जागरूक किया। इन घटनाओं के चलते उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की, जिसने रंगभेद के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गाँधी जी हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग के विचारों से सहमत नहीं थे। देशभर में घूम कर और लोगों से मिल कर वह यह जान चुके थे कि विविधताओं भरे देश को किसी धर्म के झंडे तले नहीं चलाया जा सकता। बंगाल विभाजन के समय हुआ आंदोलन भी उन के सामने था। हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाईयों संयुक्त आंदोलन के कारण ही अंग्रेज़ों को बंगाल विभाजन का फैसला वापस लेना पड़ा था। स्वतंत्रता के लिए भी इसी एकता कि ज़रूरत थी। गाँधी जी को अंग्रेज़ों कि ताकत का भी अंदाज़ा था। उनका मानना था कि अंग्रेज़ों से युद्ध करके आज़ादी हासिल नहीं की जा सकत। इस लिए उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया, नौजवानो का एक वर्ग लड़ कर स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता था। गाँधी जी उनसे सहमत नहीं थे लेकिन उनका खुल कर विरोध भी नहीं करते थे। गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भी भारतियों को अधिकार दिलाने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाया था। उन्हें वहां कोई खास कामयाबी तो नहीं मिली लेकिन बड़ी संख्या में लोगों ने उनकी बातों को सराहा। बाद में रंग भेद को मिटाने में इस आंदोलन ने बड़ी भूमिका निभाई। धीरे धीरे कांग्रेस राष्ट्र वादियों का संगठन बन गया जिस में हिन्दू और मुस्लमान अमूर्त राजनितिक इकाई थे। पंजाब, गुजरात, बम्बई, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और देश के अन्य राज्यों के मुस्लमान कांग्रेस के साथ थे। गाँधी पर सब को विश्वास था क्योंकि वह सब के समान अधिकारों के वकील थे। गांधी जी ने नमक आंदोलन में दांडी मार्च की घोषणा की तो साथ ही यह तय किया कि यदि मुझे गिरफ्तार कर लिया जाये तो जस्टिस अब्बास तैय्यब जी के नेतृत्व में मार्च जारी रहेगा। इसी प्रकार रौलेट एक्ट के विरुद्ध लोग प्रदर्शन कर रहे थे, तो 9 अप्रैल, 1919 को दो राष्ट्रवादी नेताओं सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल को ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। इसके परिणाम स्वरूप भारतीयों का एक बड़ा वर्ग उद्वेलित हो उठा। जलियांवाला बाग़ में इस गिरफ़्तारी का विरोध करने के लिए लोग जमा हुए थे जिन पर जनरल डायर ने गोली चलवाई थी।

खिलाफत आंदोलन में गांधी जी की भूमिका

1915 में भारत लौटने के बाद, गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। गोपाल कृष्ण गोखले के मार्गदर्शन में उन्होंने देशवासियों को एकता की आवश्यकता का एहसास कराया। जब उन्होंने चम्पारण में नील की खेती के खिलाफ सत्याग्रह किया, तब वह राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने लगे। गांधी जी का मानना था कि स्वतंत्रता संग्राम के लिए हिंदू-मुसलमानों की एकता जरूरी है, और उन्होंने हमेशा विविधता में एकता का समर्थन किया।

कांग्रेस और मुसलमानों के सम्बन्ध का अंदाज़ा इस बात से भी होता है कि १९३७ के चुनाव में कांग्रेस ने उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रान्त सहित ग्यारह में से प्रांतों सफलता प्राप्त की जबकि मुस्लिम लीग का प्रदर्शन बहुत ख़राब रहा। उसे ५ प्रतिशत से भी काम वोट मिले थे। इसके बाद जवाहरलाल नेहरू, गाँधी जी और कई कांग्रेस के नेताओं की ओर से घोषणा की गई कि अब देश में केवल दो राजनैतिक शक्तियां हैं, राष्ट्रवादी कांग्रेस और साम्राज्यवादी ब्रिटिश राज। जिन्ना को इस घोषणा से झटका लगा वह उदारवादी मॉडल समर्थक थे। जिस का उद्देश्य मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों के अधिकारों कि रक्षा करना था। जिन्ना १९०४ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए, वे गोपाल कृष्ण गोखले के प्रशंसक थे। जो बिर्टिश राज के खिलाफ बहिष्कार या कट्टरपंथी करवाई के बजाये क्रमिक, बातचीत के ज़रिए सुधर में विश्वास करते थे। जिन्ना कांग्रेस में मुसलमानो कि आवाज़ थे उन्हें २५ जनवरी १९१० को दिल्ली में साठ सदस्यीय भारतीय विधान परिषद् में "बम्बई से मुस्लिम सदस्य " के रूप में काम करने का मौक़ा मिला। १९१३ तक जिन्ना मुस्लिम लीग का समर्थन करने या उसमें शामिल होने के विरुद्ध थे जबकि लीग नै नहीं थी। उन्होंने कांग्रेस और लीग को सुधार एजेंडे पर सहमत होने के लिए एक साझा मंच पर लाने में मदद की। लखनऊ के इस सत्र में भारत के मुसलमानों को प्रांतीय परिषदों में ३० प्रतिशत प्रतिनिधित्व देने और पृथक निर्वाचन क्षेत्र की गारंटी दी गई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक साझा मोर्चा बनाया गया। १९३७ के चुनाव के बाद कांग्रेस अपने वेड से मुकर गई। इसके कारण जिन्ना का कांग्रेस पर से विश्वास उठ गया।

गांधी जी और विभाजन का संकट

जब देश का विभाजन होने लगा, तो गांधी जी ने इसे रोकने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने जिन्ना के साथ बातचीत की और प्रस्ताव रखा कि उन्हें सरकार बनाने का पहला मौका दिया जाए। गांधी जी का मानना था कि अगर उन्होंने विभाजन को रोकने के लिए अडिगता दिखाई होती, तो देश का विभाजन टल सकता था। उनके सामर्थ्य और सम्मान का कद ऐसा था कि उनके विचारों ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला, लेकिन अंततः विभाजन की प्रक्रिया आगे बढ़ गई।

इस घटना ने एक ओर जिन्ना को कांग्रेस से दूर कर दिया दूसरी ओर अलग देश के विचार को बल दिया। उस समय नेशनलिस्ट मुसलमानों की बड़ी संख्या कांग्रेस के साथ थी। खान अब्दुल गफ्फार खान, मौलाना महमूदुल हसन, मौलाना अबुल कलम आज़ाद, हुसैन अहमद मदनी,मौलाना हसरत मोहनी, सय्यद मेहमूद, रफ़ी अहमद किदवई, डॉ ज़ाकिर हुसैन, हकीम अजमल खान, डॉ मुख़्तार अहमद अंसारी, मौलाना असीम बिहारी, अब्दुल क़य्यूम अंसारी, मोहम्मद बरकतुल्लाह, उबैदुल्लाह सिंधी, शब्बीर अहमद उस्मानी, अहमद अली लाहोरी आदि। गाँधी जी हिन्दू मुस्लिम राष्ट्र के खिलाफ थे। वह नहीं चाहते थे कि देश विभाजित हो, वह एकता और बराबरी के समर्थक थे। उन्होंने लोध, कोइरी, कुर्मी, जाटवों, बाल्मीकियों आदि के साथ बरते जाने वाले भेदभाव के खिलाफ उपवास किया था। गाँधी जी ने हिन्दू समाज से अपील की थी कि इन्हें कम से कम इंसान समझा जाये। लेकिन उन्होंने हिन्दू समाज में पाई जाने वाली वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने को कभी नहीं कहा। शायद वह हिन्दुओं कि उच्च जातों के विरोध से डरते थे। हिन्दू राष्ट्र के विचार से भी वह इसी लिए असहमत थे कि वर्ण व्यवस्था के बग़ैर इस कि कल्पना नहीं कि जा सकती। इस से हिन्दू जातों के आपस में टकराने कि सम्भवाना थी।

जब बंगाल में मुस्लिम लीग की सरकार बानी तो उस में हिन्दू महासभा के श्यामाप्रसाद मुखर्जी कैबनिट मंत्री थे। आज़ादी से पहले १९४६ में ब्रिटेन के वॉयसराय लार्ड वैवेल ने अंतरिम सरकार बनवाई। उन्हें उम्मीद थी कि नेहरू ओर जिन्ना गठबंधन सरकार में कुछ महीने कम करलेंगे तो उनके बीच एक तरह कि समझ बूझ पैदा हो जाएगी। अंतरिम सरकार नेहरू के

भाग्य की यात्रा: गांधी की दक्षिण अफ्रीका की ओर यात्रा"

इस छवि में महात्मा गांधी को जीवन-परिवर्तनकारी यात्रा पर जाते हुए देखें। यह क्षण उनके अन्याय के खिलाफ संघर्ष की शुरुआत का प्रतीक है, जो उन्हें अहिंसक प्रतिरोध के महान नेता के रूप में स्थापित करेगा।

नेतृत्व में बनाने के लिए छह कांग्रेसियों, पांच मुस्लिम लीग के सदस्यों और तीन छोटे अल्पसंख्यक समूहों के नुमाइंदों को मनोनीत किया गया। इस से भी नेहरू और जिन्ना के बीच कि दूरियां कम नहीं हुईं। नेहरू का जिन्ना से इस कदर मोह भांग हो चूका था कि वह उन्हें अपना पाकिस्तान देने को तैयार हो गए थे। उन्होंने अपनी जेल डायरी में लिखा "जिन्ना को अपने छोटे से देश को चलाने देने का फ़ायदा यह होगा कि वो भारत के विकास में रोड़ा कम अटकाएं।" इसी के बाद कांग्रेस ने विभाजन के प्रस्ताव को मंज़ूरी दी थी।

देश के विभाजन कि सुगबुगाहट जब तेज होने लगी तो चालीस हज़ार मुस्लमान दिल्ली में इस का विरोध करने के लिए इकट्ठे हुए इन में दस हज़ार महिलाएं भी थी। गाँधी जी ने कहा था कि देश का विभाजन उनकी लाश पर होग। ३१ मार्च से ४ अप्रैल,१९४७ के बीच गांधी जी ने माउंटबेटन से पांच बार बातचीत की, माउंटबेटन लिखते हैं "गांधी ने मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि मिस्टर जिन्ना को सरकार गठित करने का पहला मौका दिया जाना चाहिए, अगर वह यह प्रस्ताव स्वीकार कर लें तो कांग्रेस ईमानदारी से खुल कर उनसे सहयोग की गारंटी दे बशर्ते जिन्ना की मंत्रिपरिषद भारतीय जनता के हित में काम करे।" यह बात जिन्ना को कभी बताई नहीं गई। मगर नेहरू को इस से बहुत तकलीफ हुई। गाँधी जी का कांग्रेस और समाज में इतना सम्मान था कि यदि वो विभाजन को रोकने पर अड़ जाते तो शायद देश टुकड़े होने से बच जाता।

डॉ आंबेडकर को बंगाल के मुसलमानो ने अपने कोटे से संसद भेजा था। उन्होंने दलितों के लिए अलग से कोटे कि मांग कि थी। गाँधी जी ने इसके खिलाफ आमरण विरत रखा। दोनों अपनी अपनी जगह अड़े थे, आंबेडकर को गाँधी जी से मिलने के लिए तैयार किया गया। इसे पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इस में तय पाया कि दलितों को आरक्षण तो मिलेगा लेकिन हिन्दू रहते हुए। यदि वे धर्म परिवर्तन कर लेंगे तो आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा। इस से अंदाज़ा होता है कि वह धर्म कि सत्ता के तो खिलाफ लेकिन हिन्दुओं कि सत्ता के नहीं। वह अक्सर स्वराज और रामराज कि बात करते थे। जबकि रामराज एक खास धर्म का प्रतीक है। आज के हुक्मरान भी रामराज की ही बात करते है। हो सकता है कि गांधी जी जिस रामराज्य की कल्पना कर रहे थे वह इससे बेहतर होता।

भारत ने जो ब्रिटिश लोकतंत्र अपनाया इस में बहुसंख्यकों के नुमाइंदों के ही सरकार बनाने का अधिकार है। गांधी जी और कांग्रेस के लरान इस बात से वाकिफ थे इसलिए उन्होंने गैर हिंदुओं को भी बहुसंखयक अम्ब्रेला के नीचे इकट्ठा रखा। गांधी जी हिंसा और अन्याय के विरुद्ध थे, विभाजन के समय जो हिंसा हुई उस ने उन्हें बहुत दुखी किया।

जिस समय दिल्ली में आज़ादी का जश्न मनाया जा रहा था उस समय वो नावाखाली और कलकत्ता रोकने कि कोशिश कर रहे थे। उनके जाने के बाद राज्य रजवाड़ों को देश का हिस्सा बनाने अल्पसंखयकों, मुसलमानों और कमज़ोर वर्गों के खिलाफ जिस प्रकार के सडयंत्र हुए उसे देख कर वह और दुखी होते। गाँधी जी जैसे लोग संसार में कम ही जन्म लेते है। मुस्लमान उन्हें ससम्मान याद करते हैं उनके रहते हुए मुसलमानों को इतने कष्टों से नहीं गुज़रना पड़ता।

लेखक : पत्रकार एवं स्तंभकार तथा यू एन एन के संपादक है।

महात्मा गांधी का आर्तनाद

मत पुकारो मुझे राष्ट्रपिता
गोडसे के वंशजों से भरे इस राज में
ये सम्बोधन सुन सुन कर
डर से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं

जब वो मेरे जन्मदिन पर
मेरी तस्वीर पर हार चढ़ाते हैं
२ अक्टूबर मुझे
३० जनवरी जैसा लगने लगता है

मत पुकारो मुझे महात्मा
आजकल तो मेरी समाधि
विदेशी मेहमानों के लिए
पर्यटक स्थल बन गई है

उनके जाते ही
फिर वही शोर
वही विवाद
मेरे विचारों पर
सवाल उठाने लगते हैं

कभी मैंने तुम्हे अंग्रेज़ों से मुक्ति दिलाई थी
अब मुझे तुम जैसो से आजादी चाहिए

अज्ञात

महात्मा गाँधी पर संगीतमय प्रस्तुति

सुरैना अय्यर

भारत में आज उन सिद्धांतों पर लगातार हमले हो रहे हैं जिन पर हमने अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी। यह हमें अपने इतिहास में वापस जाने और जवाब खोजने पर मजबूर करता है। मेरे शोध से मुझे कई अद्‌भुत खोजें मिलीं, लेकिन सबसे अप्रत्याशित थी महात्मा गांधी की अपनी लेखनी की शक्ति।

27 सितंबर 2024 को मैंने "गांधी लीला" का मंचन किया, जो महात्मा गांधी के जीवन और आदर्शों पर आधारित एक नृत्य नाटिका है। इस नाटक के माध्यम से सत्याग्रह का सार समझाया गया है। सत्याग्रह केवल प्रतिरोध नहीं, बल्कि मानवता और प्रेम का एक आदर्श है। गांधी जी ने अपनी कल्पना और विचारों के माध्यम से हमें दिखाया कि सत्य और प्रेम से दुनिया को बदला जा सकता है। उनकी प्रेरणा से हम आज भी सीख सकते हैं कि किस तरह से हम एक न्यायपूर्ण और दयालु समाज का निर्माण कर सकते हैं।

मैंने जीवनभर इतिहासकारों और लेखकों द्वारा गांधी जी पर लिखे गए लेख पढ़े, उनके बारे में नाटक और फिल्में देखीं, और अपने पिता व अन्य बुजुर्गों को उनके बारे में बातें करते सुना। लेकिन गांधी जी को उनके अपने शब्दों में जानने का अनुभव मेरे लिए नया था। गांधी जी की मेरी समझ पहले एक ऐसे नेता की थी जिसने सविनय अवज्ञा, असहयोग, हड़ताल, बहिष्कार और सार्वजनिक प्रदर्शनों जैसे अहिंसक तरीकों से राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा किया। मुझे वे बीसवीं सदी में अहिंसक आंदोलनों का नेतृत्व करने वाले नेताओं में से एक लगे।

लेकिन जब मैंने गांधी जी के लेख पढ़े, तब मुझे एहसास हुआ कि उनकी सोच हमारी स्वतंत्रता संग्राम के केवल स्वशासन से कहीं अधिक थी। उनके लिए सत्याग्रह नागरिक प्रतिरोध से भी ज्यादा बड़ा विचार था। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने अखबार 'इंडियन ओपिनियन' में सत्याग्रह के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की थी, जिसमें यह शब्द 'सत्य' और 'आग्रह' से बना है। 'सत्य' का अर्थ केवल सच नहीं बल्कि न्याय, अच्छाई और प्रेम भी था। 'आग्रह' का मतलब किसी को आमंत्रित करना है। इस तरह, सत्याग्रह का मतलब हुआ - सत्य, न्याय, प्रेम और मानवता के लिए एक आमंत्रण।

गांधी जी ने कहा कि सत्याग्रही का उद्देश्य अपने विरोधियों को हराना नहीं, बल्कि उन्हें समझाना और उनके दिल में परिवर्तन लाना था।

सत्याग्रह का मतलब था कि हिंसा के बजाय सत्य और प्रेम से अपने दुश्मनों का हृदय परिवर्तन करें। गांधी जी के शब्दों में, "सत्याग्रही का उद्देश्य किसी को मजबूर करना नहीं, बल्कि उसका हृदय परिवर्तन करना है।" उनके अनुसार, संघर्ष का अंतिम परिणाम यह होना चाहिए कि दुश्मन आपके दोस्त बन जाएं। यह तभी संभव होता जब विरोधी को अहिंसा के माध्यम से सच और न्याय की समझ आ जाए।

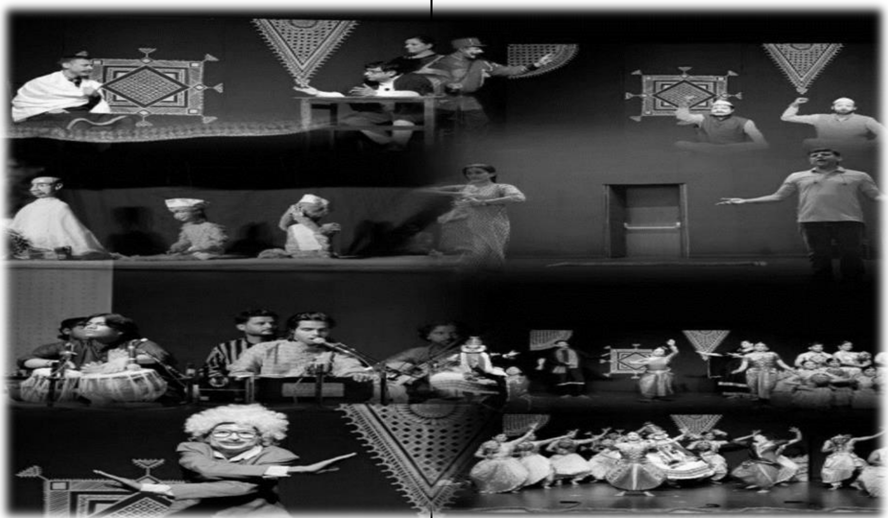

गांधी जी मानते थे कि अगर किसी भी शासन के सभी नागरिक उसके अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन करने से इनकार कर दें और बिना हिंसा के उसका सामना करें तो उस शासन को चलाना असंभव हो जाएगा। उनके लिए यह प्रतिरोध केवल कानून का उल्लंघन नहीं था, बल्कि एक नैतिक

दृढ़ता की अभिव्यक्ति थी। गांधी जी ने सत्याग्रह को "गतिशील अहिंसा" कहा। आत्म-पीड़ा के माध्यम से विरोध व्यक्त करना गांधी जी का अनोखा तरीका था। उनके अनुसार, सत्याग्रह में आत्म-पीड़ा को दृढ़ता और साहस से सहना ही अत्याचारी के दिल में परिवर्तन लाएगा।

गांधी जी का यह विचार था कि सत्य और प्रेम की शक्ति इतनी प्रभावी होती है कि आप बिना किसी हिंसक संघर्ष के दुनिया को बदल सकते हैं। उनके अनुसार, सत्याग्रह के द्वारा अत्याचारी को न केवल हराया जा सकता है, बल्कि उसका उत्थान भी किया जा सकता है। सत्याग्रह एक तरह से विरोधी के दिल से संवाद करने का तरीका था।

गांधी जी के लेखन से यह भी पता चलता है कि वह एक राजनीतिक नेता के बजाय एक आंदोलन के नेता थे। उन्होंने अपने लेखों में खुद की गलतियों को स्वीकार किया और जहां वह जनता की राय से असहमत थे, वहां उन्होंने अपने तर्क प्रस्तुत किए। गांधी जी ने हमेशा सत्य के प्रति निष्ठा दिखाई, और यह हमें सिखाता है कि सत्य का पालन करते हुए राजनीति कैसे की जा सकती है। उनके लेखों ने जनता को उनसे संवाद करने का एक खुला मंच दिया।

गांधी जी का सबसे बड़ा गुण यह था कि वे अपने विचारों को सरलता से प्रस्तुत करते थे। वह हर हफ्ते जनता के सामने अपने विचारों के साथ खड़े होते थे, और लोगों ने उन्हें सुना और समझा। उनकी महानता सिर्फ इसलिए नहीं थी कि वह बड़े नेता थे, बल्कि इसलिए कि भारतीयों ने उनकी महानता को पहचाना। यह भारतीय समाज की समझदारी का प्रतीक है कि उन्होंने गांधी जी को राष्ट्रपिता का दर्जा दिया।

गांधी जी को पढ़ते हुए यह भी साफ हो जाता है कि उनके समय में जो सवाल उठाए गए थे, वही आज भी उठाए जा रहे हैं। उन पर आलोचनाएं पहले भी की गईं, और उन्होंने उन आलोचनाओं का जवाब भी दिया। यह हमें भरोसा दिलाता है कि हम इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

> भारत में आज स्वतंत्रता संग्राम के सिद्धांतों पर हमला हो रहा है। महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता दर्शाती है कि उनका सत्याग्रह एक आध्यात्मिक आंदोलन था, जिसमें न्याय और प्रेम का महत्व था। उन्होंने अहिंसा और आत्मिक परिवर्तन से अन्याय के खिलाफ लड़ाई की। हाल ही में आयोजित "गांधी लीला" नृत्य नाटिका में उनके सिद्धांतों को नृत्य और संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। गांधीजी का जीवन हमें यह सिखाता है कि सत्य और न्याय पर आधारित परिवर्तन ही एक न्यायपूर्ण समाज की ओर ले जा सकता है।

गांधी जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि भारतीयों को समझाया जा सकता है, वे एक-दूसरे के साथ समझौता कर सकते हैं। आज जहां हम भारतीयों के बीच लड़ाई देख रहे हैं, गांधी जी ने हमें दिखाया कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे मिल सकते हैं। उनकी विचारधारा हमें आज भी प्रेरित करती है।

गांधी जी को पढ़ने से यह भी समझ में आता है कि वह एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन उनका विश्वास और संकल्प उन्हें असाधारण बनाता था। सत्य, अच्छाई और भाईचारे के प्रति उनका विश्वास अद्वितीय था। उन्होंने अपने विचारों से समाज को नई दिशा दी और हमें सिखाया कि अगर आप सत्य और प्रेम पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो आपको पूरी निष्ठा से उसमें विश्वास करना होगा। गांधी जी ने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि सत्य और प्रेम से दुनिया को बदला जा सकता है।

गांधी जी ने कहा था कि बिना न्याय और प्रेम के भारत की स्वतंत्रता किसी तानाशाही से कम नहीं होगी। यह एक ऐसी अंतर्दृष्टि है जिसे हमें समझना चाहिए। गांधी जी का आध्यात्मिक दृष्टिकोण उन्हें न केवल भारत की स्वतंत्रता के बारे में सोचने में मदद करता था, बल्कि एक ऐसा समाज बनाने की प्रेरणा देता था जहां न्याय और समानता हो। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने तब थे, और हमें उनसे प्रेरणा लेकर अपने समाज को बेहतर बनाने की दिशा में काम करना चाहिए।

गांधी जी ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि अगर आपके विचारों में सच्चाई है और आप दृढ़ता से उनका पालन करते हैं, तो आप दुनिया को बदल सकते हैं। यह उनका विश्वास था कि भारत एक ऐसा देश बनेगा जो न केवल स्वतंत्र होगा, बल्कि न्याय और प्रेम पर आधारित होगा। उनके आदर्शों से हमें आज भी प्रेरणा मिलती है, और हमें उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाकर एक बेहतर समाज बनाने की दिशा में काम करना चाहिए।

--------- -------

लेखिका, कलाकार और कार्यकर्ता हैं। उन्होंने भाग्यम आर्ट्स एंड कंपनी की स्थापना की है। विचार जो कलात्मक प्रदर्शनों का "रिफ्लेक्ट सीरीज़" नामक एक साल भर चलने वाला कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा और धर्मनिरपेक्षता, विविधता, लोकतंत्र और भारतीय इतिहास के विषयों पर बातचीत करता है। PROGRAM'S अगले वर्ष गांधी जयंती तक हर माह आयोजित किया जाएगा।

बापू-भक्त लखनऊ के यह राष्ट्रप्रेमी मुस्लिम

के. विक्रम राव

लखनऊ के पुरातन इस्लामी आध्यात्मिक केंद्र फिरंगी महल में जोरशोर से गांधी जयंती मनाई जाती है। आम संदेश दिया कि राष्ट्रपिता से प्रेरणा पाकर भारतीय मुसलमानों ने तनमन से ब्रिटिश राज की मुखालफत की थी। बापू ने राष्ट्रीय सामंजस्य को पनपाया, बढ़ाया। एक गौरतलब तथ्य यह रहा कि भारतीय इस्लामी विद्वान मौलाना अब्दुल बारी फिरंगी महली, 111 पुस्तकों के लेखक, ने बापू के असहयोग संघर्ष का पुरजोर समर्थन किया था। उन्होंने गोवध पर मजबूती से पाबंदी लगाने की पुरजोर मांग की थी।

एकता की गूंज:
गांधी जयंती के अवसर पर लखनऊ का फिरंगी महल राष्ट्रीय सामंजस्य की भावना का जश्न मनाता है, यह याद दिलाते हुए कि भारतीय मुसलमानों ने राष्ट्रपिता से प्रेरणा लेकर ब्रिटिश राज के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया। जानें कैसे यह ऐतिहासिक केंद्र विश्वास और स्वतंत्रता का प्रतीक बना।

अपने लखनऊ प्रवास के दौरान महात्मा गांधी अपनी बकरी के साथ मौलाना अब्दुल बारी के अतिथि होते थे। महात्मा गांधी शाकाहारी थे, इसलिए उनके लिए खाना बनाने के लिए लखनऊ के चौक इलाके से एक ब्राह्मण रसोइया खास तौर पर बुलाया गया था। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में भी इसका जिक्र किया है। जंगे आजादी में गुलामी की बेड़ियां तोड़ने में फरंगी महल के उलमा की चार पीढ़ियों ने संघर्ष किया। उन्होंने जहां असहयोग आंदोलन की नींव डाली तो वहीं ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार किया था। उलमा ने पाकिस्तान जाने से इनकार कर दिया।

पाकिस्तान बनने के बाद चौधरी खलीकुज्जमां के छोटे भाई चौधरी मुशरिकउज्जमा ने फरंगी महल आकर मौलाना कुतुबउद्दीन को पाकिस्तान आने की दावत दी। उन्होंने मौलाना को पाकिस्तान में हर तरह की सहूलियत देने का वायदा किया। तब मौलाना ने मिर्जा के एक शेर : "मौजे खूं सर से गुजर ही क्यों न जाए, आस्ताने यार से उठ जाएं क्या ?" सुना कर उन्हें मना कर दिया। मौलाना कुतुबउददीन की पोती नुजहत फातिमा बताती हैं कि पाकिस्तान बनने के (1947 में) बाद चौधरी खलीकुज्जमां के छोटे भाई चौधरी मुशरिकउज्जमा ने फिरंगी महल आकर मौलाना कुतुबउददीन को पाकिस्तान आने की दावत दी। लेकिन मौलाना ने मना कर दिया।

आजादी की लड़ाई में फरंगी महल की खास अहमियत थी। यहां के हॉल में स्वतंत्रता संग्राम की बैठकें हुआ करती थीं। इन बैठकों से पहले हमेशा वंदे मातरम् और अल्लाह-ओ-अकबर का नारा लगता था। जब गांधीजी की हत्या हुई तो फरंगी महल से मौलानाओं का एक जुलूस नंगे पांव निकला। इसमें पीछे एक धुन बज रही थी और सब की जुबां पर रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम...था। ये लाइनें गुनगुनाते हुए सभी विक्टोरिया स्ट्रीट से अमीनाबाद पार्क पहुंचे थे।वर्तमान में फिरंगी महल के मौलाना खालिद रशीद उसी परंपरा को निभा रहे हैं। राष्ट्रीय सामंजस्य को दृढ़ कर रहे हैं। मगर आज क्या हालत है जिन्ना-सृजित इस स्वप्नलोक की ? बंबइया फिल्मी संवाद-लेखक 63-वर्षीय शक्तिमान “विकी” तलवार ने अपनी ताजी फिल्म “गदर-2” में लिखा : “दुबारा मौका हिंदुस्तान में बसने का इन्हें मिले, तो आधे से ज्यादा पाकिस्तान खाली हो जाएगा।” अभिनेता सनी

प्रतिरोध की विरासत:
स्वतंत्रता संग्राम में फिरंगी महल की महत्वपूर्ण भूमिका को जानें, जहां मौलाना अब्दुल बारी जैसे विद्वानों ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन का समर्थन किया। यह जानें कि कैसे यह केंद्र उपनिवेशवाद के संकट के बीच एकता का दीप जलाए रखा।

देओल ने पाकिस्तान से यह भी कहा : "कटोरा लेकर घूमोगे, तब भी भीख नहीं मिलेगी।"

यदि आज पर विभाजन की त्रासदी पर विमर्श हो, तो एक ऐतिहासिक पहलू गौरतलब बनेगा। (मेरी नई किताब "अब और पाकिस्तान नहीं" : अनामिका प्रकाशन) : असंख्य नामी-गिरामी इस्लामी नेता बटवारे के कठोर विरोधी थे। जिन्ना अकेले पड़ गए थे। तब भी भारत क्यों टूटा ? गौर करें उन दारुल इस्लाम के भारतीय विरोधियों के नाम पर। सिंध के मुख्यमंत्री गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला ने तकसीम के प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। पंजाब के प्रधानमंत्री मलिक खिजर हयात तिवाना ने इसे पंजाब प्रांत और जनता को विभाजित करने की एक चाल के रूप में देखा। उनका मानना था कि पंजाब के मुस्लिम, सिख और हिंदू सभी की संस्कृति

गांधी और उलमा:
इस गांधी जयंती पर, जानें महात्मा गांधी और फिरंगी महल के उलमा के बीच की गहरी संबंध की कहानी, जिन्होंने न केवल नेता का स्वागत किया, बल्कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनका अडिग समर्पण आज भी प्रेरणा देता है।

एक समान थी और वे धार्मिक अलगाव के आधार पर भारत को विभाजित करने के खिलाफ थे। मलिक खिजर हयात, जो खुद एक नेक मुस्लिम थे, ने अलगाववादी नेता मुहम्मद अली जिन्ना से कहा : "वहां हिंदू और सिख तिवाना हैं, जो मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनकी शादियों और अन्य समारोहों में जाता हूं। मैं उन्हें दूसरे राष्ट्र वाला कैसे मान सकता हूं ?" ढाका के नवाब के आदि भाई ख्वाजा अतीकुल्लाह ने तो 25,000 हस्ताक्षर एकत्र किए और विभाजन के विरोध में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया था।

पूर्वी बंगाल में खाकसार आंदोलन के नेता अल्लामा मशरिकी को लगा कि अगर मुस्लिम और हिंदू सदियों से भारत में बड़े पैमाने पर शांति से एक साथ रहते थे, तो वे स्वतंत्र और एकजुट भारत में भी ऐसा ही कर सकते थे। उनका मानना था कि अलगाववादी नेता "सत्ता के भूखे थे और ब्रिटिश एजेंडे की सेवा करके अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए मुसलमानों को गुमराह कर रहे थे।" सिंध के मुख्यमंत्री अल्लाह बख्श सूमरो मजहबी आधार पर विभाजन के सख्त विरोधी थे। सूमरो ने घोषणा की कि "मुसलमानों को उनके धर्म के आधार पर भारत में एक अलग राष्ट्र के रूप में मानने की अवधारणा ही गैर-इस्लामिक है।" मौलाना मज़हर अली अज़हर ने जिन्ना को काफिर-ए-आज़म ("महान काफिर") कहा। जमात-ए-इस्लामी के संस्थापक मौलाना अबुलअला मौदुदी का तर्क था कि पाकिस्तान की अवधारणा ही उम्माह के सिद्धांत का सरासर उल्लंघन करती है। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के मुख्यमंत्री डॉ. खान साहब अब्दुल जब्बार खान भारत में ही रहना चाहते थे। उनके अग्रज थे सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान जो ताउम्र पाकिस्तानी जेल में रखे गए थे। कांग्रेसी मुसलमान जो विभाजन के कट्टर विरोधी रहे उनमें थे मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. जाकिर हुसैन,

विपक्ष की आवाजें:
जब हम विभाजन के दुखद विरासत पर विचार करते हैं, यह लेख उन कई प्रभावशाली मुस्लिम नेताओं की कहानियों को उजागर करता है, जिन्होंने विभाजन के खिलाफ खड़े होकर अपनी आवाज उठाई। उनकी कहानियाँ हमें एकता, विश्वास और सामंजस्यपूर्ण राष्ट्र की निरंतर संघर्ष के बारे में महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती हैं।

रफी अहमद किदवई आदि।

जिन्ना के कट्टर समर्थकों ने भी भारत में ही रहना पसंद किया था। मसलन राजा महमूदाबाद अमीर हसन खान, बेगम कुदुसिया अयाज रसूल जो यूपी की विधान परिषद सदस्या थीं, और मेरठ के नवाब मुहम्मद इस्माइल खान। यह नवाब साहब तो जिन्ना के बाद मुस्लिम लीग के अध्यक्ष बनने वाले थे। तीनों के सामने प्रश्न था दारुल इस्लाम में जाएं अथवा दारुल हर्ब में रहकर भारत में अपनी जायदाद बचाएं। मजहब दोयम दर्जे पर आ गया था। पैसा प्यारा था।

विक्रम राव वरिष्ठ पत्रकार और पत्रकार संगठन IFWJ के अध्यक्ष है।

शास्त्री जी मेरे पिता, मेरे गुरु और मेरे आदर्श

सुनील शास्त्री

(मीडिया मैप के संवादाता प्रशांत गौतम को दिए गए साक्षात्कार पर आधारित)

शास्त्री जी, मेरे बाबूजी, उनकी ईमानदारी, सरलता और सादगी आज भी लोगों के दिलों में बसी है। यही कारण है कि आज भी उनके प्रति लोगों का अटूट प्यार है। उन्हें देखकर लोगों को यह महसूस होता था कि वह किसी बड़े नेता से नहीं, बल्कि अपने ही बीच के एक साधारण व्यक्ति से मिल रहे हैं। शास्त्री जी की यही विनम्रता उन्हें जनता के दिलों में खास स्थान दिलाती थी। लोगों को लगता था कि वह हमारे ही बीच के एक आदमी हैं, जो आज देश की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

मुझे वह घटना आज भी याद है जब देश में अनाज की कमी थी, और लोग चिंता में थे कि आगे क्या होगा। उस कठिन समय में भी शास्त्री जी ने अपने नेतृत्व और सादगी से देश को दिशा दिखाई।लेकिन बाबूजी ने उस समय 'जय जवान, जय किसान' के नारे को देखते हुए देश के किसानों और जवानों को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया। जवानों से उनका मतलब सिर्फ सेना से नहीं था, बल्कि युवा पीढ़ी से भी था। उनके मन में यह विश्वास था कि देश को सही दिशा में आगे ले जाने का काम युवा ही करेंगे। यही वजह थी कि वह युवा पीढ़ी पर पूरा विश्वास करते थे।

उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, और मुझे आज भी याद है, जब मैं बाबूजी की टेबल पर लिखा हुआ एक आदर्श वाक्य देखता था, तो मन में बार-बार यह विचार आता था कि क्यों न मैं बाबूजी से पूछूं कि मैं अपने जीवन का आदर्श वाक्य क्या बनाऊं? शास्त्री जी ने गुरु नानक जी का वाक्य रखा था – "नानक नन्ने ही रहो, जैसे नन्ही दूब। बड़े-बड़े बही जात हैं, दूब खूब की खूब।" यह वाक्य दिल को छू लेने वाला था। इसके बगल में बाबूजी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी लिखा था – "Remain a small one, as smaller grass, and other plants will stay away." मैं इस वाक्य से

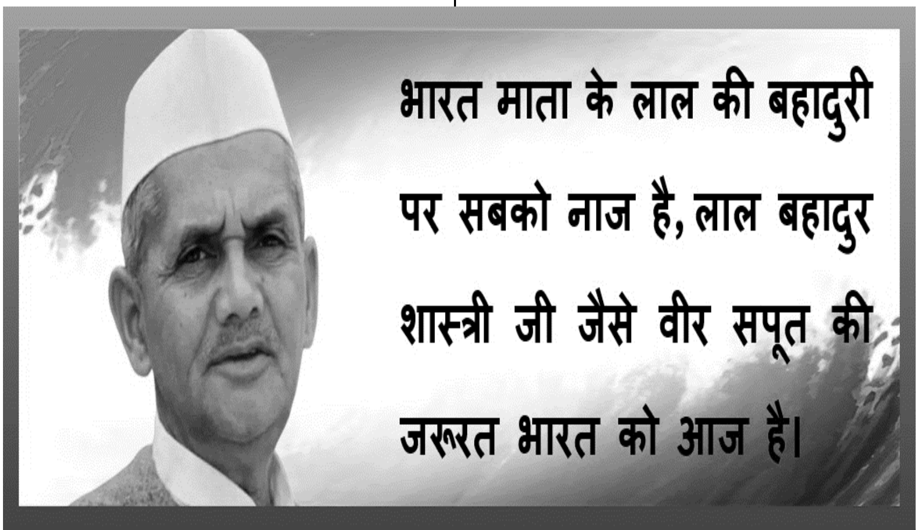

बहुत आकर्षित होता था, पर पूरी तरह उसका अर्थ समझ नहीं पाता था। एक दिन मैंने बाबूजी का हाथ पकड़ लिया और कहा, "बाबूजी, आज आप दफ्तर नहीं जा सकते, मुझे इन पंक्तियों का अर्थ बताना ही पड़ेगा।"

बाबूजी ने कहा, "सुनील, मेरी मीटिंग है, जाना होगा। बाद में बात करेंगे।" मैंने कहा, "हर बार मीटिंग, हर दिन मीटिंग। आपका बेटा कब तक इंतजार करेगा? बस एक बार बता दीजिए।" तभी उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा और प्यार से कहा, "देखो, नन्हे पौधे की तरह बनो। धूप कितनी भी तेज़ हो, वो हमेशा हरा रहता है। मैंने कभी सुंदर फूल बनने की कोशिश नहीं की, क्योंकि फूल तो आकर्षित करता है, लेकिन उसकी खुशबू कुछ समय की होती है। असली सेवा उस पौधे की है जो सालों तक हरा रहता है, जैसे हमें अपने देश की सेवा में हर दिन खड़ा रहना चाहिए।"

बाबूजी ने जब यह बात कही, तो मैं बेहद प्रभावित हो गया और उनसे कहा, "बाबूजी, आपने कितनी अद्भुत पंक्तियाँ अपने जीवन का लक्ष्य बना लीं, और इसी के कारण आज आपने देश में हरियाली फैला दी। आपने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया, जो आज भी लोगों को प्रेरित करता है।" बाबूजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ, क्योंकि मेरा सपना था कि देश में हर जगह हरियाली हो, लोग किसानी करें, कुछ न कुछ उगाएं, सिर्फ चावल ही नहीं, बल्कि फल, सब्जियाँ और अनाज भी।

जब देश हरा-भरा होगा, तभी उसकी समृद्धि टिकाऊ होगी। यही सोचकर मैंने 'जय जवान, जय किसान' का नारा अपनाया।" तब मैंने एकदम

दूसरा सवाल किया, "तो मेरे लिए आप क्या संदेश देंगे?"

जब मैंने बाबूजी से पूछा, "मैं किस आदर्श पर चलने की कोशिश करूँ?" तो उन्होंने गंभीरता से कहा, "तुमने बहुत बड़ा सवाल पूछा है, इसके उत्तर में समय लेगा।" फिर उन्होंने ताजमहल का उदाहरण देते हुए कहा, "दुनिया भर से लोग ताजमहल देखने आते हैं और कितने लोग ताजमहल देखने आते रहेंगे , लेकिन अगर एक दिन समय की मार से ताजमहल खंडहर में बदल जाए, तब क्या लोग उसके बुनियाद रखने वालों को याद करेंगे? नहीं। मैं उत्तर बाबूजी के आँखों की तरफ देख कर उसमें से ढूंढ रहा था। बाबूजी ने कहा असली बुनियाद वे नींव के पत्थर हैं जिनके ऊपर ताजमहल खड़ा हुआ है।" उन्होंने मुझे समझाया, "मैं चाहता हूँ कि तुम भी मजबूत नींव की तरह बनो, जिस पर भारत का भविष्य खड़ा हो सके। भारत का हर युवा एक नींव का पत्थर बने और मानवता की सेवा के लिए मजबूत नींव रखे। यही सच्चा आदर्श है।"

जब शास्त्री जी जैसे लाखों लोग होंगे, तभी हमारा देश सच्चाई और सादगी के रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़ेगा और हर काम को ईमानदारी से पूरा करेगा। तब देश का नाम पूरी दुनिया में चमकेगा। शास्त्री जी के समय में मुरारजी देसाई, इंदिरा गांधी, कामराज, जयप्रकाश नारायण जैसे कई बड़े नेता थे, लेकिन इन सभी के बीच शास्त्री जी का व्यक्तित्व सबसे अलग और प्रेरणादायक था। उनके भीतर ऐसी क्या खासियत थी जो उन्हें सबसे अलग बनाती थी? वह सादगी, ईमानदारी और कर्मठता की मिसाल थे, यही गुण उन्हें महान बनाते हैं।

जिन्होंने लाल बहादुर शास्त्री जी को उनकी ऊंचाई तक पहुंचाया, यह बात वाकई दिल को छू लेने वाला है। उस समय के हर नेता के दिल में गहरी देशभक्ति और लोगों के प्रति असीम प्रेम और सद्भावना थी। हर कोई देश का सही मार्गदर्शन करना चाहता था। लेकिन शास्त्री जी में कुछ विशेष था, जो उन्हें बाकी नेताओं से अलग बनाता था। मुझे याद है, जब जयप्रकाश नारायण जी घर आए थे, तो बाबूजी ने पहले से ही कह दिया था कि उनका पैर छूना। मुरारी भाई और डॉ. राजेंद्र प्रसाद के लिए भी ऐसा ही कहा गया था। शास्त्री जी ने हमेशा सिखाया कि कोई भी व्यक्ति अपने काम से बड़ा होता है, ना कि केवल अपने पद से। उनकी सादगी, ईमानदारी, और सेवा भावना ने उन्हें एक महान नेता बनाया। लोगों को उन पर भरोसा था कि जो भी काम शास्त्री जी करेंगे, वह देशहित में होगा। शास्त्री जी के कार्यों ने उन्हें एक विश्वसनीय नेता के रूप में स्थापित किया, और यही कारण है कि आज भी लोग उन्हें सम्मान के साथ याद करते हैं। उनकी सच्चाई और सेवा का जज्बा उन्हें महान बनाता है।

शास्त्री जी का सरलता और सादगी का संदेश
लाल बहादुर शास्त्री जी की जीवनशैली और नेतृत्व ने भारतीय समाज को एक नया दिशा दिया। उनकी सरलता और ईमानदारी ने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि वे किसी बड़े नेता से नहीं, बल्कि अपने ही बीच के एक आम इंसान से मिल रहे हैं। "जय जवान, जय किसान" का नारा देकर उन्होंने न केवल देश के किसानों और जवानों को प्रेरित किया, बल्कि युवा पीढ़ी की जिम्मेदारी भी समझाई। शास्त्री जी का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है,

एक बड़े नेता ने कहा था कि, वह भी एक बड़े नेता हैं, और हम भी बड़े नेता हैं। दोनों कैबिनेट मंत्री हैं, लेकिन फिर भी एक स्पष्ट अंतर है। इस फर्क को समझना आवश्यक है। जब मैं लाल बहादुर शास्त्री जी की बात करता हूँ, तो मैं उनके व्यक्तित्व की दिव्यता को महसूस करता हूँ। जहा तक मेरा सवाल है मैं एक पुरुष हूँ और शास्त्री जी एक देव पुरुष है, जिनकी कार्यशैली और दृष्टिकोण में गहराई थी।

मुझे याद है, एक पब्लिक मीटिंग में जब शास्त्री जी का नाम लिया गया, तो लोगों की भीड़ में उनकी महानता के प्रति गहरी आस्था और उत्साह देखा गया। उस समय उन नेता ने कहा कि हमारे और शास्त्री जी के बीच क्या फर्क है। यह सही है कि उनके कार्य करने का तरीका अनोखा था, जो उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाता था।

जहां तक मेरा सवाल है, मैं एक पुरुष हूँ, लेकिन शास्त्री जी एक शास्त्री जी एक देव पुरुष, ऐसी शख्सियत थे जिनका नेतृत्व और प्रेरणा आज भी हमारे लिए मार्गदर्शन करती है। उनकी दृष्टि और विचार हमें सिखाते हैं कि सच्चे नेता वही हैं, जो अपने लोगों की भलाई के लिए प्रतिबद्ध हों।

अगर शास्त्री जी आज जीवित होते, तो वे अपनी राजनीति के बारे में क्या विचार रखते और राज्य के नेताओं को क्या मार्गदर्शन देते, यह एक महत्वपूर्ण और गहरा सवाल है। मैं अपने आप को इस लायक नहीं समझता कि मैं बाबूजी की भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त कर सकूं, लेकिन एक साधारण व्यक्ति और उनके पुत्र होने के नाते मैंने उनके विचारों को बहुत करीब से देखा है।

जब मैं 16-17 साल का था, तो मैंने बाबूजी से प्रेरणा ली। मुझे याद है, जब मैं बड़ा होना चाहता था, डॉक्टर बनने का सपना देखता था। उनकी सादगी और समर्पण ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। जब भी वे किसी बच्चे की तबीयत के बारे में सुनते, तो तुरंत उनकी मदद के लिए आगे बढ़ते।

बाबूजी ने हमें हमेशा सच बोलने की सीख दी। वे कहते थे कि एक झूठ बोलने से हजारों झूठों का जाल बुनना पड़ता है, लेकिन एक सच को बनाए रखना आसान होता है।

यदि बाबूजी आज होते, तो वे लोगों को समझाते कि सच्चाई और सेवा के मार्ग पर चलकर ही हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

जाति का प्रश्न: हिन्दू दक्षिणपंथियों का बदलता नैरेटिव

प्रो राम पुनियानी

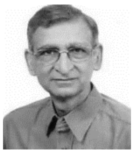

पिछले आम चुनाव (अप्रैल-मई 2024) में जाति जनगणना एक महत्वपूर्ण मुद्दा थी. इंडिया गठबंधन ने जाति जनगणना की आवश्यकता पर जोर दिया जबकि भाजपा ने इसकी खिलाफत की. जाति जनगणना के संबंध में विपक्षी पार्टियों की सोच एकदम साफ़ और स्पष्ट है.

जाति के मुद्दे ने हिन्दू दक्षिणपंथी राजनीति को मजबूती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है. उच्च जातियां, निम्न जातियों का शोषण करती आईं हैं यह अहसास जोतीराव फुले और भीमराव आंबेडकर जैसे लोगों को था. इस मुद्दे से जनता का ध्यान हटाने के लिए उच्च जातियों के संगठनों ने भारत के अतीत का महिमामंडन करना शुरू कर दिया. हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा और मनुस्मृति के मूल्य इन ताकतों के एजेंडा के मूल में थे. पिछले कुछ दशकों से आरएसएस ने इस नैरेटिव को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है कि सभी जातियां बराबर हैं. संघ से जुड़े लेखकों ने विभिन्न जातियों पर कई किताबें लिखीं जिनमें यह कहा गया कि अतीत में सभी जातियों का दर्जा बराबर था.

आरएसएस नेताओं का यह दावा है कि अछूत जातियां विदेशी आक्रान्ताओं के अत्याचारों के कारण अस्तित्व में आईं और उसके पहले तक हिन्दू धर्म में उनका कोई स्थान नहीं था. संघ के कम से कम तीन नेताओं ने दलित, आदिवासी और कई अन्य समूहों के जन्म के लिए मध्यकाल में 'मुस्लिम आक्रमण' को ज़िम्मेदार बताया है. संघ के एक शीर्ष नेता भैयाजी जोशी के अनुसार, हिन्दू धर्मग्रंथों में कहीं भी शूद्रों को अछूत नहीं बताया गया है. मध्यकाल में 'इस्लामिक अत्याचारों' के कारण अछूत दलितों की एक नयी श्रेणी उभरी. जोशी के लिखा है: "हिन्दुओं के स्वाभिमान को तोड़ने के लिए अरबी विदेशी हमलावरों, मुस्लिम राजाओं और गौमांस भक्षण करने वालों ने चंद्रवंशी क्षत्रियों को गायों को काटने, उनकी खाल उतारने और उनके कंकाल को किसी सूनी जगह फेंकने जैसे घिनौने काम करने पर मजबूर किया. इस तरह विदेशी हमलावरों ने 'चर्म-कर्म' करने के लिए एक नयी जाति बनाई और यह काम स्वाभिमानी हिन्दू कैदियों को सज़ा के स्वरुप दिया जाता था."

> जाति जनगणना पर आधारित यह लेख आरएसएस और दलित चिंतन के बीच के मतभेदों को उजागर करता है। लेख में बताया गया है कि कैसे हिन्दू राष्ट्रवादी जाति प्रथा का महिमामंडन करते हैं, जबकि आंबेडकर जैसे समाज सुधारक इसे खत्म करने की बात करते थे। आरएसएस के मुखपत्र पाञ्चजन्य में प्रकाशित लेखों का उद्देश्य जाति को सकारात्मक संस्था बताने का है, जबकि सच्चाई इससे कोसों दूर है। यह लेख जाति के असमानता पर आधारित ऐतिहासिक तथ्यों का विस्तार से विश्लेषण करता है।

इस सारे दुष्प्रचार का उद्देश्य है जाति को ऐसी सकारात्मक संस्था बताना, जो हिन्दू राष्ट्र की रक्षा करती आई है. जाति जनगणना की मांग के जोर पकड़ने की पृष्ठभूमि में आरएसएस के मुखपत्र पाञ्चजन्य ने 5 अगस्त (2024) के अपने अंक में हितेश सरकार का एक लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक है "ऐ नेताजी: कौन जात हो". लेख में यह दावा किया गया है कि विदेशी आक्रान्ता जाति की दीवारों को तोड़ नहीं सके और इसी कारण वे हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन नहीं करवा सके. जाति, हिन्दू समाज का एक मुख्य आधार है और उसी के कारण विदेशी हमलों के बाद भी देश सुरक्षित और मज़बूत बना रहा. इस लेख में बम्बई के पूर्व बिशप लुई जॉर्ज मिल्ने की पुस्तक "मिशन टू हिन्दूस: ए कॉन्ट्रिब्यूशन टू द स्टडी ऑफ़ मिशनरी मेथडस" से एक उद्धरण दिया गया है. उद्धरण यह है: "...तो फिर वह (जाति), सामाजिक ढांचे का आवश्यक हिस्सा है. मगर फिर भी, व्यावहारिक दृष्टिकोण से वह लाखों लोगों के लिए धर्म है...वह किसी व्यक्ति की प्रकृति और धर्म के बीच कड़ी का काम करती है."

लेखक के अनुसार, मिशनरीज़ को जो चीज़ उस समय खल रही थी वही आज भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को खल रही है क्योंकि कांग्रेस, ईस्ट इंडिया कंपनी और लार्ड ए.ओ. ह्यूम की उत्तराधिकारी है. इसमें यह भी कहा गया है कि चूँकि आक्रान्ता, जाति के किले को नहीं तोड़ सके इसलिए उन्होंने (मुसलमानों) ने इज्ज़तदार जातियों को हाथ से मैला साफ़ करने के काम में लगाया और यह भी कि उस काल से पहले हाथ से मैला साफ़

करने की प्रथा का कहीं वर्णन नहीं मिलता. लेख में कहा गया है कि मिशनरी समाज के पिछड़ेपन के लिए जाति प्रथा को दोषी मानती हैं और कांग्रेस को भी जाति एक काँटा नज़र आती है.

यह लेख झूठ का पुलिंदा है. पहली बात तो यह कि दूसरी शताब्दी ईस्वी में लिखी गयी 'मनुस्मृति' में जाति प्रथा की व्याख्या और उसकी जबरदस्त वकालत की गयी है. यह पुस्तक देश में विदेशी आक्रांताओं के आने के सैकड़ों साल पहले लिखी गयी थी. कई अन्य पवित्र हिन्दू ग्रंथों में भी कहा गया है कि निम्न जातियों के लोगों को उच्च जातियों से दूर रहना चाहिए. यही सोच अछूत प्रथा और हाथ से मैला साफ़ करने की प्रथा - दोनों की जननी है. पवित्रता और प्रदूषण से सम्बंधित सारे नियम और आचरण ओर पुनर्जन्म का सिद्धांत भी इसी सोच पर आधारित है. नारद संहिता और वाजसनेयी संहिता भी यही कहती हैं. नारद संहिता में अछूतों के लिए जो कर्तव्य निर्धारित किये गए हैं, मानव मल साफ़ करना उनमें से एक है. वाजसनेयी संहिता कहती है कि चांडाल गुलाम हैं जो मनुष्यों का मैला साफ़ करते हैं.

डॉ आंबेडकर का मानना था कि जाति प्रथा को ब्राह्मणवाद ने समाज पर लादा है. आरएसएस के मुखपत्र में प्रकाशित लेख जहाँ जाति प्रथा की तारीफों के पुल बांधता है वहीं क्रन्तिकारी दलित चिन्तक और कार्यकर्ता उसे हिन्दू समाज की सबसे बड़ी बुराईयों में से एक मानते हैं. इसी कारण डॉ आंबेडकर ने जाति के विनाश की बात कही थी.

हिन्दू राष्ट्रवादी, आनुपातिक प्रतिनिधित्व और जाति जनगणना के पूरी तरह खिलाफ हैं. आनुपातिक प्रतिनिधित्व की शुरुआत गाँधीजी और डॉ आंबेडकर के बीच हस्ताक्षरित पूना पैक्ट से हुई थी और बाद में इसे संविधान का हिस्सा बनाया गया. इसके विरोध में अहमदाबाद में 1980 और फिर 1985 में दंगे हुए. सन 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के बाद, राममंदिर आन्दोलन अचानक अत्यंत आक्रामक हो गया.

जहाँ तक कांग्रेस के ईस्ट इंडिया कंपनी और ह्यूम की विरासत की उत्तराधिकारी होने के आरोप का सवाल है, यह सफ़ेद झूठ है. इस तरह के झूठ केवल वे ही लोग फैला सकते हैं जो स्वाधीनता आन्दोलन से दूर रहे और आज भी भारत को एक बहुवादी और विविधताओं का सम्मान करने वाले देश के रूप में नहीं देखता चाहते. तिलक से लेकर गाँधी तक के नेतृत्व में कांग्रेस ब्रिटिश शासन के खिलाफ थी. ह्यूम इसी कांग्रेस का हिस्सा थे. ऐसा आरोप लगाया जाता है कि ह्यूम ने कांग्रेस की परिकल्पना एक सेफ्टी वाल्व के रूप में की थी. मगर गहराई से अध्ययन करने पर कांग्रेस के गठन की प्रक्रिया और उद्देश्य साफ़ हो जाते हैं. देश में उभरते हुए राष्ट्रवादी संगठनों जैसे मद्रास महाजन सभा (संस्थापक पनापक्कम आनंदचेरलू), बॉम्बे एसोसिएशन (संस्थापक जगन्नाथ शंकर शेठ) और पूना सार्वजनिक सभा (संस्थापक एम.जी. रानाडे) को स्वतंत्रता की अपनी मांग को उठाने के लिए एक राजनैतिक मंच की ज़रुरत थी. उन्होंने कांग्रेस के आव्हान को स्वीकार किया और उसे एक ऐसा राष्ट्रीय मंच बनाया जो नए उभरते भारत की आकाँक्षाओं को उठा सके. इसकी शुरूआती मांगो में शामिल था आईसीएस की परीक्षा के लिए भारत में केंद्र बनाना. कांग्रेस ने ज़मींदारों पर नियंत्रण लगाने की मांग भी उठाई ताकि उनकी अधीनता में काम कर रहे श्रमिक आजाद हो सकें और यह भी कहा कि देश के औद्योगीकरण के लिए अधिक सुविधाएँ मुहैय्या करवाई जानी चाहिए.

> पिछले आम चुनावों में जाति जनगणना एक अहम मुद्दा बना रहा, जिससे संघ और विपक्ष के बीच मतभेद और गहरे हुए। लेख में बताया गया है कि कैसे आरएसएस जातिगत असमानताओं को नकारते हुए इस्लामिक आक्रमणों को दलित उत्पीड़न का कारण मानता है। दूसरी ओर, डॉ. आंबेडकर और अन्य क्रांतिकारी चिंतक इसे हिन्दू समाज की सबसे बड़ी बुराई मानते हैं। लेख व्यापक ऐतिहासिक संदर्भों और तथ्यों पर आधारित है, जो पाठकों को जाति व्यवस्था के असली रूप से अवगत कराता है।

आगे चलकर इसी कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज्य' और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे भी बुलंद किये. जिस कांग्रेस पर पाञ्चजन्य निशाना साध रहा है, उसी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया और साथ ही सामाजिक न्याय, जिसके आंबेडकर पुरजोर समर्थक थे, के मुद्दे को भी उठाया.

आंबेडकर, जो भारतीय संविधान के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते थे और आरएसएस, जो हिन्दू राष्ट्रवाद की वकालत करती थी, के बीच के अंतर को भुलाया नहीं जा सकता. आंबेडकर ने मनुस्मृति का दहन किया था जबकि आरएसएस इस पवित्र पुस्तक में प्रतिपादित जातिगत असमानता के मूल्यों का समर्थक है. आंबेडकर ने भारत के संविधान का मसविदा तैयार किया था और आरएसएस ने इसी संविधान का खुलकर विरोध किया था. और आज भी परोक्ष रूप से कर रहा है.

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया. लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सन 2007 के नेशनल कम्यूनल हार्मोनी एवार्ड से सम्मानित हैं)

इंदिरा गांधी जैसा मैंने उन्हें जाना, समझा

प्रो प्रदीप माथुर

स्वतंत्र भारत की तीसरी प्रधानमंत्री के रूप में श्रीमती इंदिरा गांधी की पारी और पत्रकारिता में मेरा प्रवेश लगभग एक साथ ही वर्ष 1966 में शुरू हुआ। उस समय से लेकर 1984 के अंत में उनकी हत्या तक ऐसा कोई दिन नहीं था जब पत्रकारों को श्रीमती इंदिरा गांधी से संबंधित कुछ न कुछ सोचना, बात करना, लिखना या संपादित करना न पड़ता हो। यह उन पत्रकारों के लिए अधिक आवश्यक होता था जिनकी रुचि समसमयकी मामलों और राजनीतिक विमर्श में थी। मेरी रुचि दोनों विषयों में ही थी।

श्रीमती इंदिरा गाँधी की राजनीतिक सभी लोगों के लिए एक पहेली थी। वह समय से आगे सोचती थी और ऐसे निर्णय लेती थीं जिनका उनके समकालीन राजनेताओं को अंदाजा भी ना होता था। वरिष्ठ और शक्तिशाली कांग्रेसी क्षत्रपों ने उन्हें राजनीति की कोई स्पष्ट समझ न रखने वाली एक महिला माना था यहाँ तक कि उन्हें गूंगी गुड़िया तब कहा था। यह कोई रहस्य नहीं कि कांग्रेस के बुजुर्ग नेताओं ने श्रीमती प्रधानमंत्री को इस विश्वास के साथ अपना नेता चुना था कि वह उनकी बात मानेगी। और उनके हिसाब से चलेगी।

बुद्धिजीवियों, वरिष्ठ पत्रकारों और उच्च-मध्यम वर्ग के लोगों ने भी इंदिरा गाँधी की क्षमता का गलत आकलन किया था। हालाँकि, मेरे जैसे कई युवा पत्रकार उनकी प्रगतिशील साख से मोहित थे। मुझे याद है कि समाचार संपादक और संपादक जैसे वरिष्ठों ने मुझे इस बात पर अक्सर डांटा था की मैं इंदिरा गाँधी के वक्तव्यों को प्रथम पृष्ठ पर मोटी हेडलाइन के साथ छाप देता था। उनका विचार था कि मेरे जैसे युवा पत्रकार विवेक से काम नहीं ले रहे थे।

जब कांग्रेस पार्टी के क्षत्रपों के साथ श्रीमती इंदिरा गाँधी का टकराव शुरू हुआ तब वरिष्ठ पत्रकार समझते थे कि इंदिरा गांधी की राजनीति लोकलुभावन थी और देश को आर्थिक तबाही की ओर ले जाएगी।

मुझे श्रीमती इंदिरा गांधी को कवर करने के लिए कभी भी नियमित रूप से तैनात नहीं किया गया था। मैंने उन्हें कभी-कभी कवर किया और छठी लोकसभा के कार्यकाल के दौरान संसदीय संवाददाता के रूप में उनको देखा सुना था। अपातकालीन के बाद वर्ष 1977 की जनता पार्टी की शानदार जीत ने कई लोगों को यह विश्वास दिलाया था कि इंदिरा गांधी का राजनीतिक करियर खत्म हो गया है । पर वह राख से फीनिक्स की तरह उठी थीं और फिर देश की सर्वोच्च और निर्विवाद नेता थीं।

लेकिन 1980 में सत्ता में वापसी के तुरंत बाद ही एक दुखद घटना घटी और उन्होंने अपने छोटे बेटे संजय को विमान दुर्घटना में खो दिया। इंदिरा गांधी न केवल एक माँ के रूप में बल्कि एक राजनीतिक सहयोगी के रूप में भी उनसे बहुत जुड़ी हुई थीं। संजय गाँधी अपनी माँ के लिए एक बहुत बड़ा सहारा थे। संजय की मृत्यु के बाद वह फिर कभी वैसी नहीं रहीं जैसी पहले हुआ करती थीं।

मैं उन लोगों में से एक हूं जो मानते हैं कि श्रीमती इंदिरा गांधी शायद इस पुराने और प्राचीन देश पर शासन करने वाली अब तक की सबसे महान शासक होतीं अगर उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अपने दो कार्यकालों के दौरान दो गलतियाँ न की होतीं। पहली गलती थी उनके पहले कार्यकाल (1966-1977) के दौरान वर्ष 1975 में आपातकाल लगाना और दूसरी गलती थी उनके दूसरे कार्यकाल (1980-84) के दौरान वर्ष 1984 में स्वर्ण मंदिर पर सैन्य हमला जिसके कारण अंततः उनके सिख सुरक्षा गार्डों ने उनकी नृशंस हत्या कर दी।

श्रीमती इंदिरा गांधी इस मायने में महान थीं कि वे दूरदर्शी होने के साथ-साथ व्यावहारिक नेता भी थीं। वे सहज रूप से जमीनी हकीकत को जानती थीं। 1967 में उन्हें आईआईटी कानपुर के संभवतः पहले दीक्षांत समारोह को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया

था। मुझे मेरे संपादक श्री एसएन घोष ने इसे कवर करने के लिए भेजा था। आईआईटी के चेयरमैन श्री पदमपद सिंघानिया, जो उस समय देश के शीर्ष पांच उद्योगपतियों में से एक थे, ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि देश में पहले से ही बहुत सारे इंजीनियरिंग कॉलेज हैं और ऐसे और कॉलेज खोलने पर रोक लगा देनी चाहिए, अन्यथा इंजीनियरों में बेरोजगारी होगी।

जब इंदिरा गांधी बोलने के लिए खड़ी हुईं तो उन्होंने इस सुझाव को पूरी तरह से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि दूसरी ओर देश में कई और इंजीनियरिंग कॉलेजों की जरूरत है। इस प्रहार से श्री सिंघानिया काफी नाराज दिख रहे थे। हम, जो प्रेस के घेरे में थे, यह नहीं समझ पाए कि कौन सही था, लेकिन श्रीमती गांधी के प्रति मेरी सारी प्रशंसा के बावजूद मुझे लगा कि वह बहुत रूखी बोल गई थीं।

वह कितनी सही थीं और उन्होंने सिंघानिया के सुझावों को इतनी अवमानना से क्यों खारिज किया, यह मुझे सालों बीतने के साथ पता लगा । वर्ष 1967 में भारत को आधुनिक औद्योगिक देश के रूप में विकसित होने के लिए हज़ारों इंजीनियरिंग कॉलेजों की ज़रूरत थी। जबकि एक शीर्ष उद्योगपति यह नहीं सोच सकता था, इंदिरा गांधी यह समझती थी।

वर्ष 1975 में आपातकाल लागू करने के कारण उन पर तरह-तरह के आरोप लगे। उन्हें तानाशाह कहा गया और उनकी लोकतांत्रिक साख पर सवाल उठाए गए। लेकिन इंदिरा गांधी मन से एक सच्ची लोकतांत्रिक महिला थीं। वह अपने से पूरी तरह विपरीत विचारों को भी सुनती थीं। फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ ने इस बारे में खुलकर बात की है। मुझे भी इसका एक छोटा सा निजी अनुभव है।

वर्ष 1983 में नई दिल्ली में सातवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन (एनएएम) को कवर करने के बाद मैंने अपने मित्र और साथी पत्रकार स्वर्गीय केएम श्रीवास्तव की मदद से एक किताब लिखी। किताब में मैंने दो बातें लिखीं जो इस विषय पर इंदिरा गांधी के ज्ञात विचारों और उनकी सरकार की आधिकारिक लाइन के अनुरूप नहीं थीं। मैंने लिखा था कि एनएएम के पास संयुक्त राष्ट्र की तरह एक सचिवालय होना चाहिए और यह कि एनएएम एक जन आंदोलन होना चाहिए, न कि गुटनिरपेक्ष देशों की सरकारों का एक परस्पर संवाद समूह मात्र ।

वर्ष 1983 नई दिल्ली में आयोजित गुटनिरपेक्ष सम्मेलन अब तक का भारत में सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मेलन है। इस सम्मलेन की अध्यक्षता करते हुए इंदिरा गांधी ने गुटनिरपेक्ष देशों के सचिवालय के सुझाव को अस्वीकार कर दिया था और घनिष्ठ अंतर-सरकारी संपर्कों पर जोर दिया था।

> इंदिरा गांधी को उनके कार्यकाल के दौरान दो गंभीर गलतियों का सामना करना पड़ा - 1975 में आपातकाल लागू करना और 1984 में स्वर्ण मंदिर पर सैन्य कार्रवाई। इन दोनों घटनाओं ने न केवल उनकी छवि को धक्का दिया बल्कि उनके जीवन के अंत का कारण भी बनीं।

पुस्तक के प्रेस में जाने के बाद हमने सोचा कि इसके विमोचन के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि श्रीमती इंदिरा गांधी ही होंगी। मैंने अपने मामा डॉ. के.पी. माथुर से संपर्क किया जो श्रीमती गांधी के निजी चिकित्सक थे। उन्होंने प्रधानमंत्री के सचिव श्री आर.के.धवन से बात की जिन्होंने मुझे फोन करके पुस्तक की एक प्रति देने को कहा। उन्होंने कहा कि पुस्तक को प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारियों द्वारा पढ़ा जाएगा, और उनके अनुमोदन के बाद ही प्रधानमंत्री इसके विमोचन करने की सहमति देंगी।

मुझे नहीं पता था कि कोई वी.वी.आई.पी. पुस्तक का विमोचन कैसे करता है या नहीं करता। लेकिन अब मुझे पूरा यकीन था कि वह पुस्तक का विमोचन नहीं करेंगी क्योंकि मैंने पुस्तक में उनके विचारों के बिल्कुल विपरीत दो बातें लिखी थीं। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब श्री धवन का फोन आया और उन्होंने मुझे बताया कि मुझे प्रधानमंत्री द्वारा किताब के विमोचन के लिए कितने लोगों के साथ कब और किस समय आना होगा। आज के राजनीतिक माहौल में सुपर वी.वी.आई.पी. द्वारा विपरीत विचारों को इस तरह से स्थान देना असंभव है।

मैं वाराणसी में अंग्रेजी दैनिक पायनियर का संपादक था, जिस समय दिल्ली में इंदिरा गांधी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मोबाइल/इंटरनेट से पहले के दिनों में संचार आज की तरह त्वरित नहीं था। सुबह दफ्तर पहुंचने पर मुझे श्रीमती गांधी की हत्या के बारे में पता चला। मैंने समाचारपत्र का एक विशेष संस्करण निकालने का फैसला किया। क्योंकि मेरी युवा संपादकीय टीम काफी हद तक अनुभवहीन थी, मैं उनके साथ ही बैठकर काम करने लगा। समाचार एजेंसी के टेक (छोटी पैराग्राफ आइटम) पढ़ते हुए मैं अपने आंसू नहीं रोक सका। । मेरे युवा सहकर्मी मुझे आंखें पूछते देखकर हैरान थे। मैं उनसे कह ना सका कि मैंने सदैव इंदिरा गाँधी में अपनी माँ की छवि देखी थी, जिनकी मेरे बचपन में ही मृत्यु हो गई थी। इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद मुझे लगा कि एक बार फिर मैंने अपनी माँ खो दी है।

लेखक : वरिष्ठ पत्रकार, मीडिया गुरु एवं मीडिया मैप के संपादक हैं।

कैसे लगाम लगेगी बीजेपी नेताओ के इन बिगड़े बोल पर

डॉ॰ सलीम ख़ान

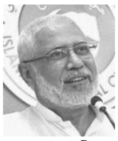

यह कहानी सिर्फ़ कंगना राणावत की फ़िल्म 'इमरजेंसी' की नहीं है, बल्कि देश में फ़िल्म इंडस्ट्री और राजनीतिक जुड़ावों के माध्यम से सत्ता के ख़िलाफ़ उठने वाली आवाज़ों की भी है। देश के मौजूदा माहौल में जब विरोध की हर आवाज़ को दबाने की कोशिश हो रही है, कंगना की फ़िल्म भी उसी तर्ज पर रुक गई है। फ़िल्म ने इंदिरा गांधी के दौर की इमरजेंसी को दर्शाने की कोशिश की, लेकिन अब यह मोदी सरकार की नीतियों की आलोचना की वजह से ख़ुद एक 'इमरजेंसी' में फँस गई है। फ़िल्म की रिलीज़ पर लगी रोक यह साफ़ संकेत देती है कि सत्ता की आलोचना करने वाले सिर्फ़ विपक्षी नेता ही नहीं, बल्कि सरकार के साथ जुड़ी हस्तियाँ भी मुश्किल में आ सकती हैं।

याद कीजिए जब एक भाजपा नेता ने विरोध प्रदर्शन के दौरान "गोली मारो सालों को" का नारा दिया था, तो इस बयान ने भी देश में सियासी हंगामा खड़ा कर दिया था। कंगना राणावत के बयान भी कुछ उसी तरह से हैं। उन्होंने किसानों पर यह आरोप लगाया कि आंदोलन के नाम पर हिंसा हो रही है और शरारती तत्व बलात्कार और हत्या जैसी वारदातों में शामिल हैं। कंगना ने यह भी कहा कि अगर भाजपा का नेतृत्व मज़बूत न होता तो पंजाब बांग्लादेश में बदल चुका होता। इस तरह के बेबुनियाद आरोपों से कई लोगों की भावनाएँ आहत हुईं, और

कंगना राणावत की 'इमरजेंसी': विवाद और सत्ता की चुनौती

कंगना राणावत की फ़िल्म 'इमरजेंसी' सिर्फ़ इंदिरा गांधी के दौर की कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान सत्ता की आलोचना का प्रतीक बन गई है। सेंसर बोर्ड की रोक से फ़िल्म एक 'इमरजेंसी' में फँस चुकी है, जो दिखाता है कि राजनीतिक जुड़ाव और फ़िल्म इंडस्ट्री के समीकरण कैसे बदल रहे हैं। कंगना का विवादास्पद बयान और सेंसर बोर्ड का फ़ैसला इस बात का संकेत है कि सत्ता की आलोचना करना अब फ़िल्म इंडस्ट्री के लिए भी चुनौतीपूर्ण हो गया है।

इन बयानों ने किसानों के विरोध के प्रति उनके रूख को सवालों के घेरे में ला दिया। कंगना की यह बदजुबानी उनकी राजनीतिक पहचान पर भी असर डाल रही है, और उनकी फ़िल्म 'इमरजेंसी' का भविष्य भी इसी विवाद के भँवर में फँसता दिख रहा है।

कंगना राणावत की तरक़्क़ी ने एक नई दिशा को दर्शाया है। अब वह सिर्फ सांसद नहीं हैं, बल्कि उन्होंने अभिनय की दुनिया से बाहर निकलकर लेखन और निर्देशन के क्षेत्र में भी कदम रखा है। यह कहानी उस अभिनेत्री की है, जो लगातार फ्लॉप फिल्मों का सामना करते-करते, एक नए सफर पर निकल पड़ी हैं। जब कंगना को अन्य फिल्म निर्माताओं ने अपनी फिल्मों में लेना छोड़ दिया, तो उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आशीर्वाद से फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा। यह कदम न केवल उनके करियर के लिए एक नया मोड़ था, बल्कि यह उनके आत्मविश्वास का भी प्रतीक था।

कंगना ने 'इमरजेंसी' नामक फिल्म बनाई, जिसमें उन्होंने खुद को फिल्म की लेखिका और निर्देशक के रूप में स्थापित किया। उन्होंने यह सोचकर फिल्म बनाई कि उनके भक्त मिलकर उसे सुपरहिट करेंगे। लेकिन, दुर्भाग्यवश, मोदी सरकार के इशारों पर काम करने वाले सेंसर बोर्ड ने उसकी रिलीज़ में रुकावट डाल दी। यह स्थिति एक पंक्ति में कहे तो, "जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे।" कंगना ने यह फिल्म गलत समय पर बनाई, क्योंकि यदि वह राहुल गांधी के सत्ता में आने का इंतजार करतीं, तो संभवतः कांग्रेस इसे रोकने की कोशिश करती और संघ परिवार उनके समर्थन में खड़ा हो जाता।

कंगना राणावत की फिल्म ने मोदी सरकार के लिए नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। जब सरकार ने फिल्म को रोकने का निर्णय लिया, तो यह स्पष्ट हो गया कि मोदी सरकार को

डर है। यह स्थिति बताती है कि "छप्पन इंच के सीने" की हवा निकल चुकी है। फिल्म और राजनीति में जो डर जाता है, वह अक्सर हार जाता है। कंगना की 'इमरजेंसी' ने प्रधानमंत्री को इंदिरा गांधी की आपातकाल की याद दिला दी, जिसमें उन्होंने गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत होना उचित समझा था। यह एक चौंकाने वाली स्थिति है कि प्रधानमंत्री बनने के बावजूद, डर कहीं न कहीं बना हुआ है।

कंगना ने खुलासा किया है कि सेंसर बोर्ड ने उनकी फिल्म 'इमरजेंसी' को रिलीज़ का सर्टिफिकेट देने से मना कर दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर यह भी कहा कि फिल्म के कुछ दृश्यों के कारण सेंसर बोर्ड के सदस्यों को जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। सवाल यह उठता है कि मोदी सरकार के होते हुए सेंसर बोर्ड को असुरक्षित क्यों महसूस हो रहा है? क्या अमित शाह उन्हें सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थ हैं?

कंगना ने यह भी कहा कि सेंसर बोर्ड फिल्म की रिलीज के लिए दबाव बना रहा है कि वे इंदिरा गांधी के कत्ल और पंजाब के दंगों के दृश्य निकाल दें।

यह स्पष्ट है कि सेंसर बोर्ड यह कदम सरकार के इशारे पर उठा रहा है। मोदी सरकार ने हर सरकारी संस्था की स्वतंत्रता को नियंत्रित कर रखा है। कंगना का यह कहना कि "अगर हम फिल्म से ये दृश्य निकाल देंगे, तो क्या दिखाएंगे?" यह उनके विचारों की स्पष्टता को दर्शाता है।

कंगना ने फिल्म के पर्दे पर इंदिरा गांधी की भूमिका निभाने की कोशिश की, लेकिन वास्तविकता में वह स्मृति ईरानी की तरह बन गईं, जिन्हें फिलहाल कोई पूछने वाला नहीं है। उन्होंने खुद को खबरों में बनाए रखने के लिए राहुल गांधी की तारीफ करने पर मजबूर होना पड़ा। उनके और स्मृति की मीडिया लड़ाई ने पार्टी के लिए समस्याएं खड़ी कर दी हैं। कंगना ने अपनी 'इमरजेंसी' की तुलना हॉलीवुड फिल्म 'Oppenheimer' से करते हुए कहा कि इसमें मैकबेथ का बादशाह बनने की कहानी है। यह सन्देश साफ़ है कि बेहतरीन लोग भी घमंड का शिकार हो सकते हैं।

> कंगना राणावत की फ़िल्म 'इमरजेंसी' का भविष्य सत्ता के विरोध में खड़े बयानों से उलझ गया है। फ़िल्म की रिलीज़ पर लगी रोक न सिर्फ़ कंगना के राजनीतिक बयानों की प्रतिक्रिया है, बल्कि यह दर्शाती है कि फ़िल्म इंडस्ट्री में सत्ता विरोधी आवाज़ें भी दबाई जा रही हैं। किसानों पर कंगना के विवादित बयान और मोदी सरकार की नीतियों की आलोचना अब उनकी फ़िल्म के भविष्य पर भारी पड़ रही है।

कंगना राणावत की विवादित टिप्पणियों के चलते भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थिति भी कमजोर हुई है। जब कंगना ने एक समाचार पत्र को दिए इंटरव्यू में कहा कि पंजाब में किसानों के आंदोलन के नाम पर शरारती तत्व हिंसा फैला रहे हैं, तो भाजपा ने पहले ही किसानों से दूरी बना ली। कंगना की बातें उनके लिए समस्या बन गईं और पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा ने उन्हें फटकार भी लगाई।

कंगना को चंडीगढ़ हवाई अड्डे पर सीआईएसएफ की महिला पुलिसकर्मी द्वारा थप्पड़ मारा गया, जब उन्होंने किसानों के खिलाफ बयान दिए थे। यह घटना उस समय हुई जब उन्होंने किसान आंदोलन के दौरान बलात्कार और हत्या के बेबुनियाद आरोप लगाए थे। इस थप्पड़ ने उन्हें एक सबक सिखाया हो सकता था, लेकिन कंगना ने अपनी जुबान पर नियंत्रण नहीं रखा।

कंगना राणावत की टिप्पणियों ने विपक्ष को एक सुनहरा मौका दिया है। पूरा सिख समाज 'इमरजेंसी' फिल्म के खिलाफ उठ खड़ा हुआ है और फिल्म की रिलीज़ में देरी हो रही है। फिल्म का गीत "सिंहासन को खाली करो" अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिढ़ा रहा है।

कंगना राणावत ने न केवल अपनी फिल्म के माध्यम से मोदी सरकार को चुनौती दी है, बल्कि उन्होंने अपने बयान और विचारों से विपक्ष को भी एक मजबूत हथियार दे दिया है। उनकी कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है, जिसने राजनीति और फिल्म उद्योग में अपने रास्ते को ढूंढने का प्रयास किया है। कंगना की यह यात्रा न केवल उनकी व्यक्तिगत पहचान को नया रूप देती है, बल्कि वह एक ऐसी पहचान की खोज कर रही हैं जो दर्शकों और आलोचकों दोनों को प्रभावित कर सके। आगे देखना होगा कि उनकी फिल्म 'इमरजेंसी' कब रिलीज़ होती है और क्या वह दर्शकों को प्रभावित कर पाएगी या नहीं।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

फलते - फूलते पर्यटन व्यवसाय पर प्राकृतिक आपदा का ग्रहण

प्रो शिवाजी सरकार

भारत में तेजी से बढ़ता आर्थिक विकास, बेहतर जीवनशैली की इच्छा, और महत्वाकांक्षी पर्यटन परियोजनाओं की बढ़ती मांग ने देश के नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों पर भारी दबाव डाला है। केरल के वायनाड से लेकर हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में अनियंत्रित विकास हो रहा है, जिससे पर्यावरणीय क्षति हो रही है और जान-माल का बड़ा नुकसान हो रहा है। यह अनियंत्रित विकास न केवल स्थानीय भूमि उपयोग पर अतिरिक्त दबाव डालता है, बल्कि मिट्टी के कटाव और आवास के क्षरण का भी कारण बनता है।

पर्यटन के चलते पहाड़ी क्षेत्रों में होने वाला अंधाधुंध निर्माण मिट्टी और पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। पर्यावरणीय स्थिरता को नज़रअंदाज करते हुए सुरंगों और सड़कों का निर्माण हो रहा है, जिससे पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हो रहा है। जोशीमठ और अब वायनाड में संकट ने इस बात को और स्पष्ट कर दिया है कि अत्यधिक बुनियादी ढांचा विकास से पर्यावरणीय क्षति हो रही है। केरल में पश्चिमी घाट की पूर्वी ढलानों पर भूस्खलन की घटनाएँ इसी लापरवाही का परिणाम हैं। स्थानीय नागरिक संगठनों ने चेतावनी दी थी कि इन क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं को नियंत्रित नहीं किया गया तो इसका गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

पर्यटन परियोजनाओं से पर्यावरणीय संकट
भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में अनियंत्रित विकास और पर्यटन परियोजनाओं के कारण पर्यावरणीय क्षति हो रही है। जोशीमठ और वायनाड जैसी घटनाएं इस संकट को उजागर करती हैं, जहां निर्माण कार्यों ने स्थानीय पारिस्थितिकी को गंभीर नुकसान पहुंचाया है।

एशियाई विकास बैंक (ADB) की 2019-2023 की रिपोर्ट के अनुसार, मौसम संबंधी आपदाओं के चलते भारत में 10,000 से अधिक मौतें हुई हैं। दक्षिण एशिया में हुई कुल मौतों का बड़ा हिस्सा भारत में ही दर्ज किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत, इंडोनेशिया, और फिलीपींस को दुनिया के सबसे अधिक आपदा-संवेदनशील देशों में शामिल किया गया है। भारत में 2019-2023 के बीच मौसम संबंधी आपदाओं से $56 बिलियन से अधिक का आर्थिक नुकसान हुआ है। यह नुकसान केवल प्राकृतिक आपदाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे अब मानव-निर्मित आपदाएँ भी कहा जाने लगा है, क्योंकि इन घटनाओं को रोकने के लिए कोई प्रभावी कदम नहीं उठाए गए।

वायनाड और जोशीमठ जैसे इलाकों में पर्यावरण के साथ समझौता करते हुए अंधाधुंध निर्माण किया जा रहा है। वायनाड में हुई भूस्खलन की घटना इसका जीवंत उदाहरण है। यहां के नाजुक ढलानों पर निर्माण कार्यों ने पर्यावरणीय असंतुलन को और बढ़ाया है। नागरिक संगठनों ने राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की चेतावनियों की अनदेखी करने का आरोप लगाया है, जिसने सुझाव दिया था कि इन क्षेत्रों से 4,000 से अधिक परिवारों को तुरंत स्थानांतरित किया जाना चाहिए। बावजूद इसके, वहां निर्माण कार्य जारी रहा और परिणामस्वरूप, कई जानें गईं और अपार संपत्ति का नुकसान हुआ।

भूस्खलन और जलवायु आपदाओं का बढ़ता खतरा
केरल और हिमाचल प्रदेश में हो रहे भूस्खलन और भारी बारिश से हुई आपदाओं ने दिखा दिया है कि भारत पर्यावरणीय असंतुलन का सामना कर रहा है। इन घटनाओं को मानव-निर्मित आपदाएं भी कहा जा रहा है क्योंकि निवारक कदम उठाने में विफलता रही है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की सैटेलाइट तस्वीरों ने वायनाड में भूस्खलन से हुई व्यापक क्षति को दिखाया है। लगभग 86,000 वर्ग मीटर जमीन खिसक गई और मलबा नदी के किनारे लगभग 8 किलोमीटर तक फैल गया। इसरो की रिपोर्ट में यह भी दिखाया गया है कि इस इलाके

में पहले भी भूस्खलन की घटनाएँ हो चुकी थीं, जिससे यह स्पष्ट हो गया था कि यह क्षेत्र अत्यधिक संवेदनशील है। इसके बावजूद, यहां निर्माण कार्य जारी रखा गया, जो एक गंभीर चूक है।

भारत में बार-बार होने वाली आपदाएँ यह दर्शाती हैं कि देश अतीत से सबक नहीं ले रहा है। 2019 में केरल को भारी बारिश और बाढ़ का सामना करना पड़ा, जिसके चलते लाखों लोग विस्थापित हो गए थे। इसी तरह, महाराष्ट्र, कर्नाटक, और हिमाचल प्रदेश में भी इसी साल भारी बारिश और बाढ़ के कारण बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ था। इन घटनाओं में यह देखा गया कि नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों पर अतिक्रमण और अनियंत्रित निर्माण कार्यों ने आपदाओं की तीव्रता को और बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बादल फटना, सुरंगों और सड़कों का टूटना आम बात हो गई है। यह क्षेत्र भूस्खलन और अन्य पर्यावरणीय आपदाओं के लिए अत्यधिक संवेदनशील हैं। 2016 में शुरू की गई 'चार धाम महामार्ग परियोजना' ने इन क्षेत्रों में पर्यावरणीय क्षति को और बढ़ा दिया है। इस परियोजना के तहत बनाई जा रही सड़कों और सुरंगों ने पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की घटनाओं को और बढ़ावा दिया है। नागरिक संगठनों और पर्यावरणविदों ने इस परियोजना के खिलाफ विरोध दर्ज कराया है, लेकिन इसके बावजूद, यह परियोजना जारी रही।

अंधाधुंध विकास की मार: चेतावनियों की अनदेखी

स्थानीय संगठनों और आपदा प्रबंधन एजेंसियों द्वारा चेतावनियों के बावजूद, भारत में अनियंत्रित निर्माण कार्य जारी हैं। नाजुक क्षेत्रों में किए गए इन कार्यों से न केवल पर्यावरण को, बल्कि स्थानीय निवासियों को भी भारी नुकसान हुआ है।

पर्यावरण मंजूरी और प्रभाव आकलन रिपोर्ट को दरकिनार करते हुए इन परियोजनाओं को छोटे हिस्सों में विभाजित किया गया है ताकि उन्हें मंजूरी की आवश्यकता न हो। हालांकि, इन परियोजनाओं के चलते बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई और मलबे के डंपिंग से पारिस्थितिकीय क्षति हुई है। पर्यावरण संगठनों ने यह भी आरोप लगाया है कि परियोजनाओं के दौरान वन (संरक्षण) अधिनियम और पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना का उल्लंघन हुआ है।

2006 से लेकर 2011 तक भारतीय वैज्ञानिकों ने मौसम संबंधी आपदाओं और अत्यधिक वर्षा की बढ़ती घटनाओं के बारे में चेतावनी दी थी। भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने भी यह पाया था कि भारत में भारी वर्षा और बाढ़ की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इसके बावजूद, इन चेतावनियों को गंभीरता से नहीं लिया गया और देश में अनियंत्रित विकास कार्य जारी रहा।

विश्व बैंक के अनुसार, भारत के 31 राज्यों में से 22 राज्य प्राकृतिक आपदाओं के लिए अत्यधिक संवेदनशील हैं। भारत का 55% भूभाग भूकंप, 8% चक्रवात, और 5% बाढ़ के प्रति संवेदनशील है। 2020 की विश्व जोखिम रिपोर्ट के अनुसार, भारत आपदाओं से निपटने के लिए 'खराब रूप से तैयार' है। यह स्थिति भारत को बार-बार होने वाली आपदाओं के लिए कमजोर बनाती है।

भारत की विकास नीतियों पर पुनर्विचार की जरूरत

विश्व बैंक और पर्यावरणविदों की रिपोर्ट्स इस बात की ओर इशारा करती हैं कि भारत में आपदाओं का खतरा लगातार बढ़ रहा है। देश को अपने विकास के मॉडल पर पुनर्विचार कर पर्यावरणीय स्थिरता के साथ समझौता किए बिना आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

भारत को आपदाओं के बाद राहत और पुनर्वास पर भारी रकम खर्च करनी पड़ रही है। 15वें वित्त आयोग ने 2021-2026 के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष के तहत 54,770 करोड़ रुपये और राष्ट्रीय आपदा न्यूनीकरण कोष के तहत 13,693 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इन आपदाओं को रोकने के लिए अगर पहले से निवारक कदम उठाए जाते, तो यह रकम बचाई जा सकती थी। लेकिन राजनीतिक उद्देश्यों और अन्य दबावों के चलते आपदा रोकथाम के उपायों को नजरअंदाज किया गया है।

भारत में आपदाओं का बढ़ता खतरा और नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों पर बढ़ता दबाव यह स्पष्ट करता है कि देश को अपने विकास की नीतियों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय स्थिरता के साथ समझौता किए बिना विकास संभव है, लेकिन इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और जागरूकता की जरूरत है।

कृपया इस बुजुर्ग आदमी पर दया करें

गोपाल मिश्रा

("यह लेख वर्ष 2016 में तिवारी जी 90 वे जन्मदिवस पर लिखा गया था। आज उनके 98 जन्मदिवस पर उनको श्रद्धांजलि देने के लिए हम इसे अपने अभिलेखागार से निकल कर पुनः प्रकाशित कर रहे है।"

~ संपादक)

हम सभी 100 साल तक जीना चाहते हैं। लेकिन लंबी उम्र अक्सर बोझ बन जाती है, जैसा कि नारायण दत्त तिवारी के मामले में हुआ। चार बार मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, राज्यपाल और देश के प्रधानमंत्री बनने से बाल-बाल बचे यह वरिष्ठ नेता 90 साल की उम्र में उपेक्षा और उपहास का जीवन जी रहे हैं। कई क्षेत्रों में उनके महान योगदान के लिए उन्हें एक वरिष्ठ राजनेता के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए। लेकिन किस्मत ने उनके लिए कुछ और ही तय किया। और यह केवल उनका ही दुर्भाग्य नहीं है। यह हमारे समय की राजनीति पर एक दुखद टिप्पणी है।

> **राजनीति के महानायक का दुर्भाग्य**
> नारायण दत्त तिवारी, जिन्होंने राजनीति में ऊंचे पदों को सुशोभित किया, आज उपेक्षा और उपहास का शिकार हैं। उनके राजनीतिक और शैक्षणिक योगदान को भुला दिया गया है और सिर्फ उनकी व्यक्तिगत कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। तिवारी जी का जीवन हमारी राजनीति और मीडिया के बदलते मिजाज पर एक दुखद टिप्पणी है।

नारायण दत्त तिवारी की महिलाओं के प्रति मानवीय कमजोरी जगजाहिर है। और कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी उनका करीबी क्यों न हो, इस मामले में उनका बचाव नहीं कर सकता। लेकिन यह उनके बारे में सब कुछ नहीं है। समस्या यह है कि उनके बारे में बात करने वाले अधिकांश लोगों को उनके पांडित्य, उनकी विद्वता, उनकी शैक्षणिक प्रतिभा और राजनीतिक विचार और सरकारी प्रशासन में उनके विशाल योगदान के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इतना ही नहीं, वे एक बेहद शिष्ट सज्जन हैं, जिनका व्यक्तिगत शिष्टाचार अनुकरणीय है।

सत्ता के शीर्ष पर बैठे तिवारी जी अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिनकी नज़र भटकी हुई है। ऊंचे पदों पर बैठे बहुत से लोग महिलाओं के प्रति आकर्षण रखते हैं। लेकिन उनके काम और योगदान पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। तिवारी जी इस मायने में बदकिस्मत हैं कि उनके पूरे योगदान को भुला दिया गया है और उन्हें सिर्फ़ उनकी मानवीय कमज़ोरी के लिए याद किया जाता है।

हमारे मीडिया ने उनकी छवि को खराब करने के लिए बहुत कुछ किया है। हालाँकि वे हमेशा पत्रकारों के प्रति विनम्र और सम्मानजनक थे, लेकिन लखनऊ में कई लोग हमेशा उनका मज़ाक उड़ाते थे, शायद इसलिए क्योंकि वे बहुत नरम थे। 1960 या 70 के दशक में शायद ही किसी पत्रकार ने उल्लेख किया हो कि तिवारी जी का शैक्षणिक जीवन शानदार था और वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के टॉपर थे। लेकिन कुछ पत्रकारों ने यह कहानियाँ फैलाईं कि जेल में सीबी गुप्ता और मोहन लाल गौतम जैसे वरिष्ठ नेताओं के उनके साथ

संबंध थे। कहा गया कि वे नपुंसक थे और... नर है न नारी है नारायण दत्त तिवारी है एक आम दोहा था। संजय गांधी की उनकी चाटुकारिता का बहुत जीकर किया गया, जो आपातकाल में राजनीतिक जीवन जीने के लिए बहुत जरूरी था ।

यह सब जितना अश्लील था, उतना ही निर्दयी भी। लेकिन तिवारी जी ने इसे कभी दिल पर नहीं लिया। वे एक सिविल सेवक की तरह विवादों से दूर रहते थे। लेकिन एक सिविल सेवक के विपरीत उनके अपने दल और विपक्ष के भीतर दुश्मन थे, जो उन्हें इतनी तेजी से राजनीति की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखना पसंद नहीं करते थे। जैसे-जैसे वे पत्रकारों को लाभ पहुँचाते गए, वैसे-वैसे और अधिक लाभ की माँग बढ़ती गई। जिनकी माँगें पूरी नहीं हो सकीं, वे उनके विरोधी बन गए।

तिवारी जी का अद्वितीय योगदान

नारायण दत्त तिवारी ने राजीव गांधी के कार्यकाल में भारत में आई कंप्यूटर क्रांति में अहम भूमिका निभाई और श्रमिक वर्ग के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। आज उनके महान योगदानों को भुला दिया गया है, जबकि उन्हें इन उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया जाना चाहिए।

केशव देव मालवीय, प्रधानमंत्री नेहरू के मंत्रिमंडल में तेल और पेट्रोलियम मंत्री थे, जिनके विवाहेतर संबंधों से एक पुत्र हुआ था। लड़का बड़ा होकर आवारा हो गया। वह मालवीय जी के मंत्री बंगले में आकर पैसे मांगता था और ना मिलने पर उलटी सीधी बकवास करता था। पत्रकारों और अधिकारियो को यह बात पता थी, लेकिन स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मालवीय ji के रिकॉर्ड और भारत की ऊर्जा सुरक्षा में उनके ऐतिहासिक योगदान के कारण किसी ने कभी इस बारे में बात नहीं की।

लेकिन यह 1960 का दशक था। 1970 के दशक और उसके बाद, खासकर आपातकाल के बाद मीडिया का लहजा और मिजाज बदल गया। पत्रकार, खासकर भाषायी मीडिया के, आत्मसंयम के नियमों का पालन करने को तैयार नहीं थे। इसलिए तिवारीजी केशव दिमालविया की तरह भाग्यशाली नहीं रहे।

मेरे मित्र प्रो प्रदीप माथुर ने उनमें ज्ञान की अद्भुत भूख देखी है। भारतीय जनसंचार संस्थान (IIMC), नई दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में काम करते हुए, प्रो माथुर को 1990-91 में लखनऊ में सरकारी नियंत्रित प्रसारण मीडिया के लिए स्वायत्तता पर एक सेमिनार आयोजित करने का काम सौंपा गया था। चूंकि मुख्यमंत्री शहर से बाहर थे, इसलिए प्रो माथुर ne पूर्व मुख्यमंत्री तिवारी जी से सेमिनार का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। तिवारी जी के उद्घाटन भाषण ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया क्योंकि उन्होंने जिन पुस्तकों और शोधपत्रों से उद्धरण दिए, वह उस पुस्तकालय में भी उपलब्ध नहीं थे, जो जनसंचार पर देश का सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय मन जाता था ।

हममें से ज़्यादातर लोग नहीं जानते कि तिवारी जी ने राजीव गांधी के कार्यकाल में भारत में आई कंप्यूटर क्रांति में बहुत बड़ा योगदान दिया था। केंद्रीय उद्योग मंत्री के तौर पर उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि कंप्यूटर और दूसरे आईटी उपकरण आम लोगों की पहुंच में हों और सिर्फ़ अमीरों की संपत्ति न बनें।

मीडिया और राजनीति का बदलता चेहरा

नारायण दत्त तिवारी का राजनीतिक जीवन जितना शानदार था, उतना ही उनका मीडिया द्वारा उपहास भी दुखद रहा। उनके शैक्षणिक और राजनीतिक कौशल को पीछे छोड़कर केवल उनकी मानवीय कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित करना एक असंवेदनशील दृष्टिकोण है, जो हमारी मीडिया और राजनीति की कठोर सच्चाई को दर्शाता है।

केन्द्र में श्रम मंत्री के रूप में तिवारी जी ने विधायी उपायों के माध्यम से श्रमिक वर्ग के कल्याण के लिए बहुत योगदान दिया, जिसे अब कॉर्पोरेट जगत और उनके राजनीतिक प्रतिनिधि अपने मुनाफे को अधिकतम करने के लिए समाप्त करना मुश्किल पाते हैं।

इस उम्र में और इस समय तिवारी जी को किसी नाम, शोहरत या पद की जरूरत नहीं है। इतना ही काफी होगा कि हम उन्हें इस दुनिया में अपना बचा हुआ समय उस देखभाल और सम्मान के साथ गुजारने दें जिसकी इस उम्र में एक व्यक्ति को जरूरत होती है।

लेखक : वरिष्ठ पत्रकार एवं पत्रकारिता शिक्षक हैं।

यौन शोषण का खुलासा होने के बाद मलयालम सिनेमा उद्योग में उथल-पुथल

मीडिया मैप न्यूज़

वर्ष 2017 में गठित तीन सदस्यीय न्यायमूर्ति के. हेमा समिति की रिपोर्ट जारी होने के बाद मलयालम फिल्म उद्योग में उथल-पुथल मच गई है। इस रिपोर्ट में उद्योग में महिलाओं के साथ भेदभाव, शोषण और यौन उत्पीड़न की चौंकाने वाली कहानियां उजागर की गई हैं। समिति द्वारा दिसंबर 2019 में केरल सरकार को सौंपी गई रिपोर्ट को 19 अगस्त, 2024 को सीमित संशोधनों के साथ जारी किया गया था।

केरल उच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति के. हेमा, पूर्व अभिनेत्री शारदा और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी केबी वलसाला कुमारी वाली हेमा समिति का गठन 2017 में केरल स्थित वीमेन इन सिनेमा कलेक्टिव (डब्ल्यूसीसी) द्वारा मलयालम फिल्म उद्योग में यौन उत्पीड़न और लैंगिक असमानता के मुद्दों पर विचार करने के लिए दायर याचिका के बाद किया गया था। मलयालम महिला अभिनेता द्वारा कोच्चि में अपने साथ अपहरण और यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने के बाद डब्ल्यूसीसी खुद अस्तित्व में आई।

रिपोर्ट से पता चलता है कि मलयालम फिल्म उद्योग में यौन संबंधों को एक महत्वपूर्ण अवधि के लिए आवश्यक माना जाता रहा है। रिपोर्ट से पता चला है कि एक शक्तिशाली समूह का अस्तित्व, जो पूरे उद्योग को नियंत्रित करने में सक्षम है, और कास्टिंग काउच कथित तौर पर उद्योग में खेल में है। ये सभी चीजें पूरे उद्योग में महिलाओं की एक श्रृंखला को प्रभावित करती हैं, जिसमें अभिनेता, तकनीशियन, मेकअप कलाकार, नर्तक और सहायक कर्मचारी शामिल हैं।

मलयालम फिल्म उद्योग में उथल-पुथल

2017 में गठित के. हेमा समिति की रिपोर्ट ने मलयालम फिल्म उद्योग के भीतर यौन उत्पीड़न और भेदभाव के गंभीर मुद्दों को उजागर किया है। महिलाओं के साथ शोषण, कास्टिंग काउच, और असमानता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे इस रिपोर्ट का केंद्र बने हैं, जिससे इंडस्ट्री में एक नया #Me-Too आंदोलन शुरू हो गया है।

रिपोर्ट में अन्य असमानताओं पर भी चर्चा की गई है, जो उद्योग में महिलाओं को नुकसान पहुंचाती हैं, जैसे कि शूटिंग स्थलों पर शौचालय, चेंजिंग रूम, सुरक्षित परिवहन और आवास जैसी आवश्यक सुविधाओं का अभाव, जो निजता के अधिकार का उल्लंघन है, पारिश्रमिक में भेदभाव और बाध्यकारी संविदात्मक समझौतों का अभाव।

रिपोर्ट के जारी होने के बाद, कई महिला अभिनेत्रियों ने उद्योग में कई अभिनेताओं और फिल्म तकनीशियनों के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं, जिससे मलयालम फिल्म उद्योग में #MeToo आंदोलन फिर से शुरू हो गया है।

हेमा समिति की रिपोर्ट केरल सरकार को सौंपे जाने के पाँच साल बाद सार्वजनिक की गई। रिपोर्ट में यौन शोषण, अवैध प्रतिबंध, भेदभाव, नशीली दवाओं और शराब के दुरुपयोग, वेतन असमानता और कुछ मामलों में अमानवीय कामकाजी परिस्थितियों की भयावह कहानियाँ उजागर की गईं। गवाहों और अभियुक्तों के नाम हटाने के बाद प्रकाशित 235 पन्नों की रिपोर्ट में कहा गया है कि मलयालम फिल्म उद्योग कुछ पुरुष निर्माताओं, निर्देशकों और अभिनेताओं के चंगुल में है।

रिपोर्ट के जारी होने से सार्वजनिक क्षेत्र में छिड़ी बहस ने कई महिलाओं को अतीत में अपने साथ हुए दर्दनाक अनुभवों के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया है। मलयालम सिनेमा के कुछ अभिनेताओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों की प्रारंभिक जांच करने के लिए वरिष्ठ महिला पुलिस अधिकारियों वाली एक विशेष जांच टीम (एसआईटी) का गठन किया गया है।

2017 में, एक लोकप्रिय मलयालम महिला अभिनेता ने कोच्चि में अपने साथ हुए अपहरण और यौन

उत्पीड़न का आरोप लगाया था। केरल पुलिस की जांच अभिनेता दिलीप पर केंद्रित थी, जिस पर यौन उत्पीड़न की साजिश रचने के आरोप में मामला दर्ज किया गया था। पीड़िता द्वारा सोशल मीडिया पर खुद को पहचाने जाने के बाद, इंडस्ट्री में अभूतपूर्व हलचल देखी गई, जिसके परिणामस्वरूप WCC का गठन हुआ।

रिपोर्ट के जारी होने के बाद से, कई महिलाओं ने, जिनमें से कुछ ने अब अभिनय छोड़ दिया है, सार्वजनिक रूप से उद्योग में यौन उत्पीड़न और उत्पीड़न का सामना करने के बारे में बात की है। कुछ पुरुष सितारों के खिलाफ एक दर्जन से अधिक पुलिस शिकायतें दर्ज की गई हैं, जिनमें से दो ने जवाबी शिकायतें भी दर्ज की हैं।

उथल-पुथल इतनी तीव्र हो गई है कि राज्य के सबसे बड़े फिल्म समूह, एसोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स (AMMA) की पूरी शीर्ष शासी संस्था को भंग कर दिया गया, क्योंकि इसके अध्यक्ष सुपरस्टार मोहनलाल ने कुछ सदस्यों पर आरोप लगने के बाद नैतिक आधार पर इस्तीफा दे दिया था। अभिनेत्री माला पार्वती ने एक टेलीविजन समाचार चैनल को दिए साक्षात्कार में कहा, "यह तो बस एक शुरुआत है। अभी तक केवल कुछ लोगों ने ही अपनी बात रखी है। इससे भी गंभीर मुद्दे सामने आ सकते हैं।"

अपनी तरह की पहली रिपोर्ट पर बॉलीवुड समेत देश के अन्य फिल्म उद्योगों के लोग भी अपनी प्रतिक्रिया पर करीब से नज़र रख रहे हैं। #MeToo अभियान के दौरान, कई महिलाओं ने अलग-अलग राज्यों में अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे, लेकिन इनमें से कुछ की ही जांच की गई है।

पोर्ट जारी होने के बाद, पहला सार्वजनिक आरोप बंगाली अभिनेत्री श्रीलेखा मित्रा की ओर से आया, जिन्होंने जाने-माने निर्देशक

रंजीत पर कुछ साल पहले उनका यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया। उन्होंने इससे इनकार किया है, लेकिन राज्य की प्रतिष्ठित मोशन पिक्चर अकादमी के अध्यक्ष

यौन उत्पीड़न और कास्टिंग काउच का पर्दाफाश

के. हेमा समिति की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि मलयालम फिल्म उद्योग में यौन उत्पीड़न और कास्टिंग काउच की प्रथा बहुत समय से चली आ रही है। इस रिपोर्ट के बाद, कई महिला अभिनेत्रियों ने अपनी आवाज़ उठाई है और आरोप लगाए हैं, जिससे इंडस्ट्री में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है।

पद से इस्तीफा दे दिया है। मित्रा ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। कई अन्य शिकायतें रिपोर्ट में बताई गई शिकायतों से मिलती-जुलती हैं, जिसमें कहा गया है कि महिलाओं को अवसरों के बदले में बार-बार समझौता करने और समायोजित करने के लिए कहा जाता था।

समिति ने उद्योग में "कास्टिंग काउच" की प्रथा के अस्तित्व की अफवाह की पुष्टि की है। अन्य क्षेत्रों के विपरीत, यौन उत्पीड़न फिल्म उद्योग में काम करना शुरू करने से पहले ही शुरू हो जाता है क्योंकि उद्योग में बहुत प्रसिद्ध लोगों द्वारा उन्हें भूमिकाएं देने के बदले में यौन संबंधों की मांग की जाती है। कुछ गवाहों ने कास्टिंग काउच के प्रयासों के सबूत के तौर पर वीडियो क्लिप, ऑडियो क्लिप और व्हाट्सएप संदेशों के स्क्रीनशॉट प्रदान किए।

कई महिलाओं को शूटिंग के दौरान उनके लिए तय किए गए आवास में अकेले रहना असुरक्षित लगता है, क्योंकि नशे की हालत में पुरुष आदतन उनके दरवाजे खटखटाते हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि गवाहों ने जबरन उनके कमरे में घुसने की कोशिशों के बारे में भी बताया। एक खास मामले में एक अभिनेत्री का जिक्र है, जिसे घटना के अगले ही दिन अपने साथ दुर्व्यवहार करने वाले की पत्नी की भूमिका निभानी पड़ी, जिससे पीड़िता को बहुत ज़्यादा आघात पहुंचा। नए लोगों को मनाने के प्रयास में, उद्योग में कुछ लोग सक्रिय रूप से यह धारणा बनाते हैं कि सफल महिलाओं ने समझौता करके सफलता हासिल की है।

समिति द्वारा जांच की गई कई महिलाएं अपने साथ घटी घटनाओं को उजागर करने से डरती थीं, क्योंकि उन्हें लगता था कि इसके दुष्परिणाम हो सकते हैं।

हेमा समिति ने सरकार को एक उचित कानून बनाने और सिनेमा में महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले सभी मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक न्यायाधिकरण का गठन करने की सिफारिश की है।

मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा है कि अगर समिति के समक्ष गवाही देने वाला कोई भी व्यक्ति अपने कथित उत्पीड़कों के खिलाफ शिकायत लेकर आता है तो सरकार निर्णायक रूप से हस्तक्षेप करेगी।

कनाडा में भारतीय भोजन की बहार

डॉ. अशोक श्रीवास्तव

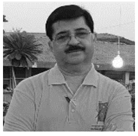

टोरंटो की ज़ेर्रार्ड इंडिया स्ट्रीट पर स्थित 'उडुपी पैलेस रेस्तरां' ने अपनी अनूठी दक्षिण भारतीय शाकाहारी स्वाद की विरासत से स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक खास पहचान बनाई है। मशहूर संगीतकार ए.आर. रहमान से लेकर फिल्म निर्माता दीपा मेहता तक, कई सितारे यहां का स्वाद चख चुके हैं। साल 2001 से यह रेस्तरां अपने लाजवाब भोजन और उत्कृष्ट सेवा के लिए जाना जाता है।

विश्व प्रसिद्ध संगीत निर्देशक ए.आर.रहमान, हॉलीवुड की फिल्म निर्माता एवं निर्देशक दीपा मेहता,

> बटर चिकन फैक्ट्री, टोरंटो के पार्लियामेंट स्ट्रीट पर, पंजाबी खाने के शौकीनों के लिए एक स्वर्ग है! यहाँ का स्मोक बटर चिकन और लहसुनिया नान आपके दिल को छू लेंगे। एक खास मिलन के दौरान पुराने दोस्तों के साथ यहाँ का स्वाद चखने का अनुभव यादगार बन गया। क्या आप तैयार हैं इस देसी जायके के सफर के लिए?

एक्टर जॉन अब्राहम, प्रसिद्ध मॉडल एवं अभिनेत्री लिसा रे, प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना रीना सांगा के साथ कनाडा के अनगिनत राजनितिक विभूतियों ने हमारे यहाँ एक नही कई बार भोजन किया है और सराहा है यह कहते कहते टोरंटो के ज़ेर्रार्ड इंडिया स्ट्रीट पर स्थित प्रसिद्ध दक्षिणी भारतीय भोजनालय उडिपी पैलेस के संस्थापक श्री हर्बर्ट की आंखे चमक से जाती हैं. सन 2001 में इस उडुपी पैलेस रेस्तरां को खोला गया तब से अपने इतिहास के पन्नो में अनगिनत सुनेहरी यादे जुडी हुईं हैं. ओंटारियो का यह पहला दक्षिणी भारतीय एवं पूर्णतया शुद्ध शाकाहारी भोजनालय था जब यह प्रारम्भ हुआ और 2003 में कनाडा के अग्रणीय समाचार पत्र ने उडुपी पैलेस रेस्तरां को सर्वश्रेष्ठ शाकाहारी भोजनालय घोषित किया इसके बाद टोरंटो स्टार समाचार पत्र ने 2007 में दो वर्ष के अंदर करीब पांच बार लेख छापा है जो की एक उपलब्धि है ।

टोरंटो के पार्लियामेंट स्ट्रीट की 'बटर चिकन फैक्ट्री' को एक बार चख लीजिये फिर याद आयेगा अपना देश ।

टोरंटो के पार्लियामेंट स्ट्रीट पर अगर आपको कहीं से हवा में तैरती बढ़िया खाने की मसालेदार सुगंध आ जाए तो समझ जाईये की आप बटर चिकन फैक्ट्री रेस्तरां के आस पास ही हैं. अगर आपको अपने घर जैसा स्मोक बटर चिकन के साथ गर्मागर्म लहसुनिया नान के उपर दाल मखनी और बैंगन के भरते का साथ चाहिए तो आप बटर चिकन फैक्ट्री चले आईये. यह फैक्ट्री आपको अपने देश की और खास कर पंजाबी खाने के स्वाद का पूरा मज़ा देगी ।

हूँ तो मैं शाकाहारी हूँ, लेकिन जब हमारे नोएडा के हम उम्र पुराने साथी जो की अब कनाडा में ही बस गये हैं श्री बी.के. लूम्बा जी का फ़ोन आया की मैं आपको मिलने आ रहा हूँ. आपसे बहुत दिनों बाद मुलाकात होगी और बटर चिकन फैक्ट्री में कुछ अच्छा भी खायेंगे, तो मैं थोडा परेशान सा हुआ और इससे पहले कुछ कहता लुम्बा जी

> टोरंटो के ज़ेर्रार्ड इंडिया स्ट्रीट पर स्थित 'उडुपी पैलेस रेस्तरां' ने न केवल भारतीय भोजन का स्वाद बढ़ाया है, बल्कि सितारों की मेज़बानी भी की है। ए.आर. रहमान से लेकर दीपा मेहता तक, इस रेस्तरां ने कला और भोजन का एक अनूठा संगम प्रस्तुत किया है। एक बार यहाँ आएं, और आप खुद को उनके स्वादिष्ट व्यंजनों में खो जाएंगे!

ने कहा अशोक जी वहां पर शाकाहारी भी बहुत अच्छा मिलता है. कुछ अपने को सयंत करते हुए मैंने कहा आईये आपका बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ. खाने से ज्यादा तो आपसे मुलाकात की ज़बरदस्त इच्छा है..लुम्बा जी बहुत ही दिलखुश, यारों के यार और सामाजिक व्यक्ति हैं, उनका अपनेपन का स्वाभाव और डील डौल ऐसा है अगर आप एक बार मिल ले तो उनको भूल नहीं सकते।

लुम्बा जी ने अपने साढ़ू भाई के संग मुझे अपनी कार से पिक किया और फिर डाउन टाउन के तरफ हम लोग चल दिए. ज्यादा दूर जाना नहीं पड़ा और बड़े बड़े और ऊँची इमारतो के अपार्टमेंट्स के बीच कार्नर में दूर से दिखाई पढ़ गया यह रेस्तरां. बहुत साफ़ सुथरा और लाल चटख रंग के वातावरण में सजा हुआ हमे अपने देसी रेस्तरां की झलक दिखला रहा था. वाकई लगा की हम दिल्ली के किसी नामी गिरामी पंजाबी रेस्तरां में आ गये

है..मुस्कराते हुए कुमारी तनवीर ने हमारा स्वागत किया और सामने मेन्यु कार्ड रख दिए । हमने भी अभिवादन का जवाब देते हुए पूछा की आप कहाँ से हैं तो उन्होंने बताया की वो भारतीय हैं और दिल्ली के राजौरी गार्डन की हैं ..यहाँ पर शिक्षा ग्रहण कर रही हैं । इससे एक यह फायदा हुआ अब इंग्लिश ज्यादा बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ी. फिर तो मालूम पड़ा की इस रेस्तरां के मालिक भी श्री सुहास भी दिल्ली से हैं और सारे यहाँ की काम करने वाले भारतीय हैं..अधिकतर पंजाबी बोलने वालें हैं

लुम्बा जी और उनके साढू भाई ने नॉन वेज में यहाँ का मशहूर बटर चिकन मंगवाया और हमने दो शाकाहारी व्यंजन मंगवा लिए. हमे लगा की कहीं कम न पड़ जाए...वैसे भी शाम के अभी साढ़े पांच ही बजे थे और डिनर कुछ ज्यादा जल्दी हो रहा था । भूख भी कुछ ज्यादा नही थी ।

जब तक भोजन तैयार होता हमने अपनी आदत के अनुसार और पाठकों को उचित जानकारी देने के लिए कुछ इस रेस्तरां की विशेषताओं पर ध्यान देने शुरू किया. एक तो सजावट लाजवाब थी और उस पर मेन्यु पर ध्यान दिया तो देखने पर लगा की अपने किसी देसी जानकार ने ही इसमें नाम लिखे हैं ज्यादातर कॉकटेल पटियाला, पंजिम, बनारस, मुंबई, मानसून, हौज़ खास स्पेशल, बॉम्बे वेलवेट इत्यादि पर थे इसमें ठंडाई नाम भी आकर्षक था । अपने गोल गप्पे, दही चाट, आलू टिक्की, समोसा, प्याज की भजिया भी साथ में थी.. खास कर बटर चिकेन की भी सात तरह की वैरायटी थी जैसे ट्रफल चिकन , गोल गप्पे चिकन, 24 कैरट गोल्ड, भोला चिकन इत्यादि... शाकाहारी एवं अन्य नोन वेज जैसे मीट, लैम्ब, इत्यदि की बहुत सारी डिशेज उपलब्ध हैं यहाँ पर वो भी देसी जायकेदार मसाले में..दोपहर के भोजन में आप थाली ही ले सकते हैं ।

मीठे में मैंगो रसमलाई और काला खट्टा चीज़ केक की मांग ज्यादा रहती है ।

खूबियों का विश्लेषण करते करते तनवीर ने हमारे सामने तैयार भोजन लगा दिया जिसको देख कर हम तीनो थोडा ससोपंज में पड़ गये क्योंकि भोजन की मात्रा हमारी उम्मीद से कही ज्यादा थी । मुझे लगा की मैंने दो व्यंजन क्यों मंगा लिए खैर भोजन लाजवाब था लुम्बा जी बोले इसको चिकन को खाकर कर दिल्ली के 'काके दा होटल"' की याद आ गयी..यह सुन कर मुझे लगा की अब तो इसके बारे में लिखना ही पड़ेगा...ताकि आप भी जब यहाँ आये और अच्छा बटर चिकन खाने का मन करे यही चले आईएगा..जिसका नाम है "बटर चिकन फैक्ट्री" ज्यादा महंगा नहीं हैं वैसे टोरंटो में भी "काके थे ढाबा" है..आपकी जानकारी के लिए ।

भूख ज्यादा न होते हुए भी भरपेट सबने खाया, स्वाद ही ऐसा था । रेस्तरां के बाहर आकर कुछ फोटो लिए और एक अंग्रेज़ भाई ने हम सबकी फोटो एक साथ लेने के बहाने अपनी सेल्फी भी खींच ली । जिसको देख कर हम सब मुस्करा दिए.. एक अच्छी से संगत और साथ छोटी सी लुम्बा जी के साथ पंगत का आनंद वाकई याद रहेगा नोएडा के सेक्टर 52 के ई ब्लाक से तेरह हज़ार किलोमीटर दूर इस मिलन का।

डॉ अशोक श्रीवास्तव नॉएडा स्थित स्वाम सेवी संस्था नवरत्न फाउंडेशन के सदस्य हैं।

कविता

सुविधाओं का ढेर, फिर भी इंसान परेशान

अच्छी थी, पगडंडी अपनी।

सड़कों पर तो, जाम बहुत है।।

फुर्र हो गई फुर्सत, अब तो।

सबके पास, काम बहुत है।।

नहीं जरूरत, बूढ़ों की अब।

हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है।।

उजड़ गए, सब बाग बगीचे।

दो गमलों में, शान बहुत है।।

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं।

कहते हैं, ज़ुकाम बहुत है।।

पीते हैं, जब चाय, तब कहीं।

कहते हैं, आराम बहुत है।।

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्री।

व्हाट्सएप पर, पैगाम बहुत है।।

आदी हैं, ए.सी. के इतने।

कहते बाहर, घाम बहुत है।।

झुके-झुके, स्कूली बच्चे।

बस्तों में, सामान बहुत है।।

नही बचे, कोई सम्बन्धी।

अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है।।

सुविधाओं का, ढेर लगा है।

पर इंसान, परेशान बहुत है।।

एक विकलांग का आत्मसम्मान

लेखक दिनेश वर्मा के बारे में

लेखक, दिनेश एन वर्मा, भारतीय सूचना सेवा के पूर्व अधिकारी हैं, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने अपना दिल और आत्मा लेखन में लगा दी और 2016 में पीपुल्स सिंडिकेट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित अपनी पहली किताब 'माई टाइम्स माई टेल्स' से इसकी शुरुआत की, जो बरेली, यूपी से दिल्ली के हलचल भरे महानगर तक की उनकी यात्रा के दौरान हुई घटनाओं और प्रकरणों पर आधारित सत्ताईस कहानियो का संग्रह है।

श्री वर्मा ने 'ए फैसिनेटिंग ट्रिप टू ह्यूमन्स मैन्युफैक्चरिंग साइट' लिखने में दूसरा प्रयास किया, जो स्पष्ट रूप से एक अवधारणा पुस्तक थी जो मनोरंजक तरीके से मानवीय स्थिति पर एक अभिनव नज़र डालती है।

लघु कथाओं और लेखों 'मेरे समय की मेरी कहानियां' के हिंदी संस्करण के प्रकाशन के बाद, हाल ही में प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक 'द ब्लेस्ड कर्स' पाठकों, विशेषकर युवाओं को स्वतंत्रता के आसपास के वर्षों में ले जाने की उनकी दीर्घकालिक इच्छा का परिणाम है, ताकि वे अपने पूर्वजों के दैनिक जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित हो सकें।

संलग्न कथा उनकी पुस्तक मेरे समय की मेरी कहानियाँ से ली गयी

- संपादक

वह भी एक अजीब दिन था हमारे लिए। कहाँ तो शिमला जैसे पहाड़ी इलाके की ठंडी खुशगवार हवाएं और कहाँ कालका रेलवे स्टेशन की सड़ी गर्मी। हिमालयन कइन के डिब्बे में बैठे हम और हमारे तीन मित्र परिवार किसी तरह हँसते गाते भयंकर गर्मी को झेल रहे थे। आखिरकार गाड़ी स्टेशन से रवाना हुई और हम लोगो ने चैन की साँस ली। गाड़ी के चलते ही जैसे जैसे गर्मी का प्रभाव कुछ कम हुआ हम अपने अपने तरीकों से समय गुज़ारने का प्रयास करने लगे। कोई ताश खेलने में मग्न हो गया और कोई विक्रेता से मगज़ पच्ची करके समय गुज़ारने लगा, उस विक्रेता से जो डिब्बे के बीच में घूम घूम कर चाय, कॉफी, पेप्सी और कोकाकोला के साथ चटपटे मसालेदार चने और मूंगफली के पैकेट बेच रहा था। यकायक ठक ठक की तेज़ ध्वनि ने मुझे पीछे मुड़कर देखने को मजबूर कर दिया। लेकिन मुझे कोई खास बात नज़र नहीं आई। केवल विक्रेता जिसकी पीठ मेरी ओर थी खाने का पैकेट किसी यात्री को थमा रहा था।

कहानी का शीर्षक: एक विकलांग का आत्मसम्मान

उस ग्राहक से निपट कर विक्रेता ने नए ग्राहक की तलाश में चारो ओर सर घुमा कर देखा। मैंने भी उस पर सरसरी नज़र डाली। वह एक ढलती उम्र का व्यक्ति था जिसके चेहरे की झुर्रियां उसके जीवन की कटुताओं की कहानी सुना रहीं थीं। उसके गले में पेटी से बंधी ट्रे लटक रही थी जिस पर चटपटे व्यंजनों से भरे पैकेट सलीके से फैला कर रखे हुए थे। क्योंकि अब वह मेरे करीब खड़ा था मैंने भी उसकी ट्रे से आलू की चिप्स का पैकेट उठा कर खोला और आपस में बांटते हुए चटकारे लेकर उसका आनंद लेने लग. 1। मैंने उसकी ओर पाँच रुपए का नोट बढ़ाया जिसे लेकर वह आगे बढ़ गया और, जैसे ही वह आगे बढ़ा, ठक ठक की तीव्र ध्वनि का राज़ खुल कर सामने आ गया। वह एक पैर पर कूद कूद कर चल रहा था। उसका दूसरा पैर था ही नहीं। उसके हाथ समान बेचने में व्यस्त थे इसलिए शायद वह लकड़ी थामने में असमर्थ था। ज़ाहिर था कि इसी तरह अपना सामान बेच कर वह गुज़ारा किया करता था। उसकी दशा पर तरस खा कर, उसकी मदद करने के उद्देश्य से, मेरे मित्र अमृत ने भी एक पैकेट चिप्स का उठा लिया और बीस रुपए का नोट उसके हाथ में थमा दिया। और फिर अमृत ने कुछ ऐसे दर्शाया मानो बाकी के पैसे वह लेना भूल गया हो। अमृत गपशप करते हुए चिप्स खा रहा था तब ही विक्रेता ने बकाया पैसे वापिस करने के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन अमृत ने ऐसे ज़ाहिर किया जैसे उसने उसे देखा ही न हो। लेकिन जब विक्रेता ने उसका ध्यान आकर्षित कर लौटाने के लिए फिर पैसे आगे बढ़ाए तो अमृत ने हाथ उठा कर उसे बकाया पैसों को अपने पास रहने देने का संकेत किया।

मैं जो दूर से बैठे बैठे यह नज़ारा देख रहा था विक्रेता के चेहरे के बदलते रंग को देख कर चौंक कर रह गया। उसके चेहरे पर क्रोध और विवशता के मिश्रित भाव उभर आए थे। उसके माथे की हर रग दया से प्रेरित किसी प्रकार की भी सहायता लेने का तीव्रता से विरोध कर रही थी। उसका चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ था।

अब जब वह बोला तो उसकी आवाज़ में रोष कम दुःख की झलक अधिक थी। "जनाब, या तो आप तीन पैकेट और ले लीजिए या फिर ये पैसे वापिस लीजिए। मैं भीख नहीं लेता।" यह कहकर बकाया पैसे उसने अमृत की हथेली पर रख दिए और स्वाभिमान से सर उठाए अपनी एक बका से चलकर वह आगे बढ़ गया। यथोड़ी की आवाज फिर सारे डिब्बे में गूंजन लिएक टांगन ठक ठक की यह आवाज जो थोड़ी देर पहले अरुचिकर लग रही थी अब कालागी मिठास घोल रही थी। आखिर यह स्वाभिमान की ध्वनि थी।

वह जैसे जैसे अपनी एक टांग से चलकर एक से दूसरी लाईन में गया, मेरी आँखें उसका पीछा करती रहीं। मैं उस मामूली से स्वाभिमानी विक्रेता पर से अपनी नज़र हत्या से उस पा रहा था। मुझे मशहूर दार्शनिक हेनरी बीचर का वह वाक्य याद आ गया जो शायद नहहोंने इस जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति को ध्यान में रख कर ही कहा होगा कि इंसान का दिल ही है जो उसे अमीर बनाता हैं। कोई भी व्यक्ति इसलिए अमीर नहीं होता है कि उसक पास क्या है बल्कि वह इसलिए अमीर है कि वह खुद क्या है।

यह दृश्य देखते-देखते मैं सोच के सागर में डुबकी लगाने लगा। मेरी यह मनोदशा अमृत से छिपी न रह सकी। वह तो खुद भी विक्रेता से मात खाए बैठा था। उसने कागज़ की गोटी फेक कर मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और फिर मेरे करीब खिसक कर पूछने लगा, "क्या हुआ? क्यों सोच में बैठे हुए हो? अभी तक उस विक्रेता के बारे में ही सोच रहे हो?" उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। "नहीं, मैं उसके बारे में नहीं सोच रहा हूँ" मैंने जवाब दिया, "हाँ, उस विक्रेता के स्वाभिमानी व्यक्तित्व को देख कर एक ऐसे व्यक्ति की याद आ गई जो इस एक पैर के देवता का बिलकुल उल्टा था। उसके पास दो शक्तिशाली पैर तो थे किन्तु इस जैसा स्वाभिमानी भाल न था।

"क्या हुआ था? मुझे तुमने उसके बारे में कभी नहीं बताया, उसने शिकायत की।

"वह कोई याद रखने वाली घटना थी भी नहीं। ऐसे लोगो की इस संसार में कमी नहीं। अगर इस विक्रेता का स्वाभिमानी व्यक्तित्व सामने न आया होता तो उस व्यक्ति के चेहरे को मैं शायद ही याद कर पाता जिसके साथ मेरी दो बार आकस्मिक मुठभेड़ हुई," मैंने उसे बताया।

"हुआ क्या था? लगता है काफी रोचक कहानी है," उसके बारे में जानने की उसकी उत्सुकता स्वाभाविक थी।

"हाँ, काफी रोचक कहानी है," मैंने जबाव दिया और उन दो घटनाओं को बयान करने लगा।

"वह एक जाड़े का खुशगवार दिन था। मैं लंच टाइम में बड़ौदा हाउस के साथ वाली पटरी पर टहलता हुआ पटियाला हाउस की तरफ जा रहा था कि यकायक एक व्यक्ति ने सामने से आ कर मुझे रोक लिया। सादे वस्त्र पहने हुए उस व्यक्ति का चेहरा बहुत ही मासूम था। कुछ क्षण वह खड़े होकर मेरी आँखों में झांकता रहा और मुझे उस की आँखों में असीम दुःख की झलक दिखाई दी। ग़ज़ब का कलाकार था वह। मध्यम श्रेणी के अच्छे खासे पढ़े लिखे एक ऐसे व्यक्ति की दुर्दशा की कहानी उसने इस ढंग से सुनाई जिसे सुन कर पत्थर भी पिघल जाए। दया करके मैंने उसे बीस रूपए का नोट थमा दिया जो सत्तर के दशक में काफी मायने रखता था। मैं बहुत खुश था कि मैंने किसी दीन दरिद्र व्यक्ति की सहायता की।

"पंद्रह दिन के बाद उसी व्यक्ति ने मुझे मुर्तीका की पटरी पर उसी ढंग से फिर रोक लिया। वही दुःख से भरा चेहरा, वही आंसू से भरी आँखें। कांपते होठों से उसने अपनी विवशता और दुर्दशा की एक नई कहानी बनाकर सुना डाली। क्योंकि मैंने उसे पहचान लिया था, लिहाज़ा कुछ देर खड़े खड़े मन ही मन उसकी एक्टिंग की और कहानी सुनाने की कला की सराहना करता रहा। जो कुछ भी उसे कहना था अपनी दुर्दशा के बारे में वह कहता रहा और मैं शान्तिपूर्वक सुनता रहा। और फिर मैंने ज़ोर से उसके कंधो को पकड़ा और उसकी आँखों में झांक कर बड़े ही ड्रामाई अंदाज़ में उसे पिछली मुलाकात, जो बड़ौदा हाउस पर हुई थी उसकी याद दिलाई। जैसे जैसे मैंने उसकी पिछली कहानी को दोहराया वह सुन्न सा खड़ा रहा एक ऐसे चोर के समान जो चोरी करते हुए पकड़ा गया हो। यकायक उसने एक झटका दिया और मुझ से अलग होकर तेज़ी से चलता हुआ भीड़ में शामिल होकर गायब हो गया।"

जैसे ही मैंने अपनी कहानी ख़त्म की अमृत ने गहरी साँस ली। डिब्बे में ठक की आवाज़ एक बार फिर हमारा ध्यान उस विक्रेता की ओर वापिस ले आई। "हां, तुम ठीक कहते हो" अमृत ने विचारात्मक अंदाज़ में कहा, "उस आदमी के पैर तो थे लेकिन स्वाभिमानी चेहरा कहाँ था। और इस विकलांग विक्रेता को देखो, कितनी मीठी है उसके एक पैर से चलने की ध्वनि ।"

पुस्तक समीक्षा

बच्चों के सशक्तिकरण का सार्थक माध्यम नुक्कड़ नाटक

(नुक्कड़ की पाठशाला लेखिका प्रतिमा मेनन की हाल ही में प्रकाशित एक पुस्तक है। आशा है यूनाइटेड स्टेट्स इंडिया एजुकेशन फ़ाउंडेशन द्वारा फुलब्राईट स्कॉलर से सम्मानित प्रतिमा मेनन का ये नाटक संकलन भी वैसी ही सफलता पाएगा जैसी उनकी पहली पुस्तक 'क्या कहूँ तुमसे' को मिली थी।
प्रकाशक: ब्लू रोज़ पब्लिशर्स
*मूल्य Rs.225 ~ **संपादक**)*

दुनिया के साहित्य में अपनी बात कहने का, अपनी अभिव्यक्ति को औरों के सामने परिभाषित का पहला माध्यम नाटक ही रहा है।

इसके कई कारण हैं।पहला, कि देखना विश्वास करने का सबसे विश्वसनीय तरीक़ा है।न्यायालय भी सुनी सुनाई बातों को गवाही नहीं मानता लेकिन दृश्य को उसे सबूत मानना ही पड़ता है।

दूसरा, किसी परिस्थिति को या कृत्य को अपनी आँखों से देखने का असर (impact) बहुत लम्बे समय तक रहता है कई बार उम्र भर।

लेकिन इस क्रम में भी नुक्कड़ नाटक का एक विशेष स्थान है क्योकि इसको करने में विशेष स्टेज या साजो सामान की व्यवस्था नहीं करनी पड़तीं।और ये कहीं भी किया जा सकता है।एक तरह से नुक्कड़ नाटक मोबाइल स्टेज है और इसका मंचन आम जनता या भीड़ के बीच आराम से किया जा सकता है।

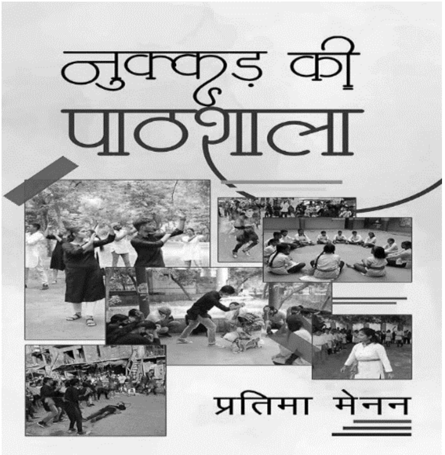

नुक्कड़ की पाठशाला की विशेषता ये है इस किताब में लिखे सारे नाटक स्कूल के बच्चों के लिए लिखे गए हैं। इसका कारण ये भी है कि प्रतिमा मेनन ख़ुद केंद्रीय विद्यालय में बच्चों को पढ़ाती थीं और 2020 में प्रिन्सिपल के पद से इस्तीफ़ा देकर अपने पिता पद्मश्री अवधेश कौशल की देहरादून में स्थापित सामाजिक संस्था 'रुरल लिटिगेशन एंटायटल्मेंट केन्द्र' का उनकी मृत्यु के बाद से संचालन कर रही हैं।

उनसे हाल ही में इसी संस्था के दफ़्तर में हुई चर्चा में प्रतिमा जी ने बताया कि जो बात बच्चों को बचपन में बताई जाती है वो उनको उम्र भर नहीं भूलती।इस बात के वैज्ञानिक प्रमाण भी हैं।

इस नाटकों के संकलन में शायद ही कोई ऐसा विषय है जो लेखिका से अछूता रह गया हो। चाहे वो दहेज प्रथा हो,यौन उत्पीड़न हो,पानी की समस्या हो,प्लास्टिक का प्रदूषण हो,बोर्ड के परिणाम के बाद साइंस या आर्ट्स लेने की बात हो या स्वच्छता हो सभी पर बड़ी ही साधारण और दिल को छू लेने वाली भाषा में नाटक लिखे गए हैं जिनका मंचन उन्होंने स्वयं अपने स्कूल के बच्चों से करवाया।

लेकिन पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा कि एक विषय को लेकर वो विशेष चिंतित हैं- बच्चों का यौन शोषण जिसने उन्होंने बच्चों को हिम्मत से अपनी बात कहने का आवाहन किया है।

वो लिखती हैं,"नुक्कड़ की पाठशाला आज के जीवन के अधिकांश समस्यापरक विषयों का संकलन है।बाल यौन शोषण कुछ ऐसा विषय है जिसपर पीड़ित बच्चे अपने माता पिता तो दूर की बात अपने मित्रों से ज़िक्र नहीं करते।इसका कारण जानने के लिए मैंने स्वयं से तथा कई महिला महिलाओं से जो बचपन में इसका शिकार हुई बात करने की कोशिश की।कोई भी पीड़ित/पीड़िता ठीक से नहीं बता पाई की उन्हें किस बात का डर था।...'कुछ ना कहो' नुक्कड़ नाटक में मेरा यही प्रयास है कि अगर यौन पीड़ित एक भी बच्ची अथवा बच्चा इसे पढ़कर अथवा नुक्कड़ पर खेला जाता हुआ देख कर अपनी आप बीती अपने माता पिता,शिक्षक अथवा किसी अन्य विश्वासपात्र को बताने हिम्मत जुटा पाता है तो मैं अपने इस छोटे से प्रयास की बड़ी सफलता समझूँगी। ***(अमिताभ श्रीवास्तव)***

मीडिया मैप वेबसाइट पर

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण

13 Sep

Tamil Nadu Takes Centre Stage In National Discourse On Education

N Sathiya Moorthy

Chennai | Friday | 13 September 2024

In today's national discourse on education, Tamil Nadu often takes centre stage. The state's approach to education, from elementary to professional levels, emphasizes social change and upliftment, focusing on creating opportunities for marginalized communities. This focus is in ideological contrast to the existing feudal system, which has resisted

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण VIDEO

24 Sep

व्यंग्य, विसंगतियों का बैरोमीटर

सेवाराम त्रिपाठी

नई दिल्ली | मंगलवार | 24 सितम्बर 2024

व्यंग्य लेखन की सही अभिव्यक्ति क्षमता, अब तक के व्यंग्य लेखन में देखी जा सकती है। इसके दो प्रमुख रूप हमारे सामने हैं - एक तरफ़ महान व्यंग्यकार जैसे मार्क ट्वेन और हरिशंकर परसाई, और दूसरी तरफ़ सामान्य और दिखावटी व्यंग्य लेखन। सवाल यह उठता है कि आज के व्यंग्य लेखन की दिशा क्या है और यह किस स्तर पर खड़ा है? यह स्थिति बहुत हद तक लेखक की सोच, उसका ज़मीर, और उसकी जनसंबद्धता पर निर्भर करती है। कई लेखक तो ऐसे हैं, जो केवल लेखन के माध्यम से अमर होने की इच्छा रखते हैं।

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण

27 Sep

एक राष्ट्र, एक चुनाव हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए खतरा

डॉ. एम. इकबाल सिद्दीकी

नई दिल्ली | शुक्रवार | 27 सितम्बर 2024

"एक राष्ट्र, एक चुनाव" (ONOE) का प्रस्ताव भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में एक प्रमुख बहस का विषय बन चुका है। यह विचार लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक साथ कराने पर जोर देता है, जिससे चुनावी खर्च में कमी और शासन में कुशलता की उम्मीद की जाती है। हालांकि, इस प्रस्ताव के साथ कई गंभीर चिंताएँ भी जुड़ी हैं, जो देश के संघीय ढांचे और लोकतांत्रिक जवाबदेही को खतरे में डाल सकती हैं।

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण

20 Sep

"Nearly 6 Crore Emails On Waqf Amendment Bill"

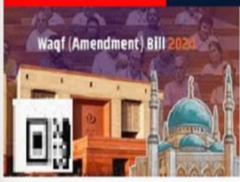

Anwarulhaq Baig

New Delhi | Friday | 20 September 2024

As the deadline to submit suggestions to the Joint Parliamentary Committee (JPC) on the Waqf Amendment Bill 2024 draws near, the battle over the bill has intensified. The All India Muslim Personal Law Board (AIMPLB) claims to have mobilized nearly 6 crore emails in opposition to the bill. In contrast, right-wing organizations and the BJP are working to rally support in favor of the legislation.

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण

25 Sep

Elam Tamil Youth Members In Canada Remember Their Hero

Prabhjot Singh

Toronto. Canada | Wednesday | 25 September 2024

Members of Sri Lanka's Eelam Tamil Youth held a symbolic show to commemorate the 37th anniversary of their liberation fighter, Thileepan, also known as Rasaiah Parthipan Theelpan. They gathered at Queen's Park, here to educate Torontonians about Thileepan's sacrifice and the Tamil genocide. They also observed a symbolic hunger strike for eight hours.

Media Map HOME TODAY'S EDITION आज का संस्करण VIDEO

16 Sep

स्वतंत्र हिंद्र द्वीप था अंडमान !

के. विक्रम राव

नई दिल्ली | सोमवार | 16 सितम्बर 2024

क्या भारत का इतिहास केवल 75 साल पुराना है ? कल जब मोदी सरकार ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का नाम बदलकर श्रीविजयपुरम रखा तो यह प्रश्न उठा। मानो युगों तथा सदियों का विवरण सिमट कर अमृत काल के दायरों में ही समा गया हो। नई पीढ़ी को कुछ तथ्य समझने होंगे। पहला यही कि अंडमान द्वीप पर भारत का आधिपत्य स्वीकारने में नेहरू को रुचि नहीं थी। मोहम्मद अली जिन्ना तो वायसराय माउंटबेटन से इस भेंट को पाने की प्रतीक्षा में थे। सरदार वल्लभभाई पटेल ने जिद ठान ली कि भारतीय शहीदों पर हुए जुल्मों का प्रतीक अंडमान स्वाधीनता सेनानियों के राष्ट्र को ही मिले। सर सिरिल रेडक्लिफ जो भारत में कहीं भी गया ही नहीं, ने ठंडे शिमला में शराब के झोंके में भारत को तोड़ डाला, फर्जी मानचित्र बनाकर। मगर पटेल की जिद के कारण अंडमान भारत के हिस्से में ही आया।

Visit Our Bilingual Website: www.mediamap.co.in

Subscribe To Our YouTube Channel : Media Map News

SCHOLARS DESTINATION

Please stay in Scholars destination and explore the beauty of surrounding areas .

PLEASE CONTACT

9045005700 | 9910322682 | www.sdmotel.com | info@sdmotel.com